तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय मुज़फ़्फ़रनगर
विद्यालय ई-पत्रिका
सत्र 2019-20

Ph No.- 0131-2620297

E-mail ID – kvmzn5@gmail.com

Website- https//:muzaffarnagar.kvs.ac.in

संपादक मण्डल

मुख्य संरक्षक

श्री चंद्रशेखर आजाद

उपायुक्त,

के.वि.सं. , आगरा संभाग

संरक्षक

श्री ब्रिजेशपाल सिंह

प्राचार्य ,

के.वि. मुज़फ्फरनगर

प्रधान संपादक

श्री ओम प्रकाश

स्नातकोत्तर शिक्षक

संपादक

1. श्री आदेश कुमार , स्नातकोत्तर शिक्षक
2. श्रीमती संतोष कन्नौजिया, प्र.स्ना. शिक्षिका
3. श्रीमती शिखा, प्र.स्ना. शिक्षिका
4. श्रीमती शोभा रानी प्र.स्ना. शिक्षिका
5. श्री दशरथ मीणा प्र.स्ना.शि.
6. श्री आलम टिग्गा प्र.स्ना.शि.

विद्यार्थी संपादक

1. कुमारी श्रेया सैनी , XII A
2. कुमारी मुस्कान मित्तल, XI A
3. कुमारी नैना धीमान , IX A

साज सज्जा एवं कवर

श्री दीपक शर्मा

सेल्वा कुमारी जे. आई. ए. एस.
कलेक्टर / जिला मजिस्ट्रेट
एवं
अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति
केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

संदेश

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य छात्र-छात्राओं का शारीरिक एवं मानसिक विकास करते हुए समाज का संवेदनशील नागरिक बनाना है। यह तभी संभव हो सकता है, जब उनको व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्रियाकलापों में प्रतिभागिता हेतु अवसर दिया जाता है। मुझे बेहद प्रसन्नता है कि केन्द्रीय विद्यालय मुज़फ़्फ़रनगर वार्षिक ई-पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों में सृजन कौशल के विकास हेतु सक्रिय है। विद्यालय का यह प्रयास विद्यार्थियों को रचनात्मकता की ओर ले जायेगा , जहाँ कविता,कहानी,निबंध, यात्रा साहित्य, अनुच्छेद लेखन एवं चित्रकला का सृजन होगा। विद्यालय ई-पत्रिका निश्चित रूप से विद्यार्थियों की अंतर्निहित योग्यताओं का प्रतिबिंब होगी।

मैं विद्यालय के प्राचार्य श्री ब्रिजेश पाल सिंह,सभी शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को विद्यालय ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देती हूं ।

सेल्वा कुमारी जे. (आई.ए.एस.)
अध्यक्ष / Chairman
विद्यालय प्रबन्ध समिति
Vidyalaya Management Committee
केन्द्रीय विद्यालय/Kendriya Vidyalaya
मुजफ्फरनगर / Muzaffarnagar

संदेश.....

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर द्वारा अपनी वार्षिक ई-पत्रिका 2019-20 का प्रकाशन करवाया जा रहा है।

नवोदित प्रतिभाओं और विद्वान शिक्षकों के भावों एवं विचारों की ज्योति अपने में समेटे विद्यालय की वार्षिक पत्रिका आपके हाथों मं है । किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है। उसी से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक रुचि का भी पता चलता है। विद्यालय की पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि यहां विद्यार्थी के सर्वांगींण विकास के लिए विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध है। वे इस क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक प्रयास कर रहे हैं।

पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन पर मैं उन सभी अभिभावकों ,छात्रों ,शिक्षक-शिक्षिकाओं ,विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों तथा शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को जिन्होंने पत्रिका के लिए अपनी रचनाएं एवं चित्र प्रकाशनार्थ दिए हैं एवं उन्हें प्रोत्साहित किया है, उन सभी के प्रति विनम्र आभार व्यक्त करता हूँ। पत्रिका के संपादक तथा संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ। इस ई-पत्रिका के प्रकाशन से छात्रों में निहित रचनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सकेगी तथा इन्ही छात्रों में से भविष्य में कुछ अच्छे पत्रकार, लेखक व कवि रुप में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकेंगे यह मेरा सहज विश्वास है।

हिन्दी कवि भवानी प्रसाद मिश्र के शब्दों में-

कुछ लिख के सो, कुछ पढ़ के सो तू ,

जिस जगह जागा सवेरे, उस जगह से बढ़ के सो तू ।

शुभकामनाएं।

(चन्द्रशेखर आजाद)
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
आगरा संभाग, आगरा

संदेश.....

विद्यालय ई-पत्रिका प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव कर रहा हूं। विद्यालय पत्रिका विद्यालय की शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक विभिन्न गतिविधियों का दर्पण होती है। छात्र-छात्राओं को सीखने के समान अवसर उपलब्ध कराना एवं उनमें अंतर्निहित योग्यताओं का विकास करने के लिए विद्यालय प्रयासरत है। आज का विद्यार्थी आने वाले भारत का भविष्य है, राष्ट्र का गौरव है । अत: शिक्षार्थियों का सर्वांगींण विकास करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

विद्यालय ई-पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मक योग्यताओं एवं क्षमताओं को मंच उपलब्ध कराना है । प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित बाल रचनाकारों की रचनाएं निश्चित रूप से हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी साहित्य की विभिन्न विधाओं का रसपान कराने में सक्षम हैं।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति संवेदन शीलता, कल्पना, एकता ,राष्ट्र प्रेम एवं विश्व बंधुत्व की भावना से समन्वित है। छात्र-छात्राओं की उत्तम गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

विद्यालय ई- पत्रिका के प्रकाशन में जिन शिक्षक-शिक्षिकाओं, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का सहयोग रहा है, वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। सभी शिक्षार्थियों को सुन्दर,सुखद,सफल एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं ।

ब्रिजेश पाल सिंह

प्राचार्य

संपादक

की कलम से.....

विद्यालय पत्रिका शिक्षण एवं शिक्षणेतर विद्यालयी क्रियाकलापों का प्रतिबिंब होती है,

जिससे विद्यार्थियों की शारीरिक एवं मानसिक दक्षताओं का पता चलता है। विद्यालय पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता एवं संवेदनशीलता के भाव का विकास कर उनको समुचित दिशा प्रदान करते हुए समाज का आदर्श नागरिक बनाना है।

प्रस्तुत पत्रिका में विद्यार्थियों ने हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा में साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कि कहानी, कविता ,अनुच्छेद, यात्रा साहित्य, पर्यावरण परक लेख रचना द्वारा रचनात्मकता का परिचय दिया है, जिनसे सहयोग, सम्मान, स्नेह, सत्य , स्वच्छता,पर्यावरण संरक्षण, एकता, अखंडता, करुणा, अहिंसा , भाईचारा एवं देश प्रेम की भावना का संदेश मिलता है।

मैं सुधी पाठकों से अनुरोध करना चाहूंगा कि रचनाओं को पढ़कर उनमें निहित संवेदनाओं को अंगीकार करते हुए त्रुटियों को नज़र अंदाज कर बाल कलाकारों का अपना शुभाशीष प्रदान करें।

अंत में मैं प्राचार्य महोदय श्री ब्रिजेश पाल सिंह जी का हार्दिक साधुवाद करता हूं,जिनका समय-समय पर समुचित मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा । मैं संपादक मंडल एवं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का भी धन्यवाद ज्ञापन करता हूं ,जिनके अथक प्रयास से ई-पत्रिका प्रकाशन कार्य समय पर संभव हो सका।

सभी बाल कलाकारों का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन ।

ओम प्रकाश गोस्वामी

स्नातकोत्तर शिक्षक

(हिन्दी)

विद्यालय के होनहार

SHIVAM GARG XIIA	KHUSHI BALIYAN XIIA	KAMYA VERMA XIIA	SHIKHA XIIA
97.2% , 486/500 (SCI.)	96.6%, 483/500(SCI.)	96%, 481/500(SCI.)	96%, 481/500(SCI.)

GUNJAN XIIB	ANKIT BALIYAN XIIB	AREEN FATIMA
86.6%,433/500 (COMMERCE)	82.6%, 413/500(COMMERCE)	82.2%, 411/500 (COMMERCE)
SAMIKSHA X A	MOHINI X B	PRANSHU X B
93.4%, 467/500	92.2%, 461/500	90%, 450/500
SHAGUN X II SHIFT	SHIVAM KUMAR X II SHIFT	AADITYA GAUR X II SHIFT
89% , 445/500	87.4% 437/500	85.2% , 426/500

विद्यालय गतिविधियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

स्वच्छ भारत अभियान

सर्वधर्म प्रार्थना

गाँधी आश्रम खादी भण्डार भ्रमण

विद्यार्थी परिषद्

योग दिवस

हिन्दी अनुभाग

गुरु.....

जब से मैं इस दुनिया में आई,
तभी से मेरी शिक्षा शुरू हो गई।
लेकिन मुझे पता न था,
कितनों की मैं ऋणी हो गई।

जीवन के सबसे पहले गुरु होते हैं मां-बाप।
पकड़कर हाथ, चलना सिखाते हैं साथ साथ।
हर मां बाप की इच्छा होती है यही,
कि उनका बच्चा हो हर परीक्षा में पास।

जैसे जैसे बड़े होते हैं हम,
एक लम्बी कड़ी जुड़ती चली जाती है।
हर छोटी से छोटी बात भी,
हमें बहुत कुछ सिखलाती है।

ज़िन्दगी में बहुत लोग आए हैं,
और भविष्य में भी आएंगे।
परन्तु क्या हमने सोचा है,
कितने सच्चाई से रूबरू करवाएंगे।
सच्चे गुरु की होती है यही पहचान,
जो हमें जीना सिखाए स्वाभिमान के साथ।
हमेशा हमारे सर पर रहे उनका हाथ।

करती हूं मैं नमन उन्हें-
जिनका मेरी इस छोटी सी ज़िन्दगी में,
है बहुत बड़ा योगदान.....

श्रेया सैनी
कक्षा-12 वी 'अ'
रमन सदन प्रथम पाली

एक पिता की आवाज

मेरी बिटिया, मेरी आन है, मेरी शान है,
इस जग में तू ही मेरी पहचान है।
तेरी किलकारिओ से गूंजा,
मेरा यह जहान है ।

तेरे हंसने पर लगता ,
खुदा कुछ मुझ पर ज्यादा ही मेहरबान है।
तेरे रोने पर लगता जैसे ,
सारी दुनिया वीरान है ।

मत रुकना तू इस ज़मीं पर,
तेरी मंजिल तो आसमान है।
हो पूरी तेरी सारी इच्छाएं ,
बस मेरा यही अरमान है ।

चलना ऐसे ही सही राह पर,
तू ही तो मेरा अभिमान है।
मत झुकने देना कभी अपने स्वाभिमान को,
वही तेरी पहचान है।

शिखा गोगालिया
कक्षा – बारहवीं अ
अशोक सदन प्रथम पाली

सीमा दर्शन आख्या .....

नमस्कार!

सर्वप्रथम में केंद्रीय विद्यालय मुजफ्फरनगर के स्टाफ का धन्यवाद करूंगा कि सीमा दर्शन प्रोग्राम के लिए मुझे चयनित किया गया यह मेरा सौभाग्य था कि मैं सीमाओं का दर्शन करने का मौका प्राप्त हुआ।

केंद्रीय विद्यालय संगठन द्वारा जयपुर देहरादून आगरा दिल्ली लखनऊ विभिन्न संभागों को सीमा दर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत धारचूला पिथौरागढ़ का भ्रमण 13 मई से 19 मई तक का भ्रमण कार्यक्रम देहरादून संभाग द्वारा आयोजित करने की जिम्मेदारी दी गई।

देहरादून संभाग के द्वारा केंद्रीय विद्यालय हल्द्वानी कैंट का इस कार्यक्रम को सफल संचालन हेतु उचित दिशा निर्देश दिए गए तदोपरांत केंद्रीय विद्यालय हल्द्वानी में पांचों संभाग के बच्चे 11 मई एवं 12 मई 2019 तक सभी संभागों के बच्चों की उपस्थिति दर्ज करा दी गई थी 12 मई को शाम 4:00 बजे केंद्रीय विद्यालय के बच्चों द्वारा विभिन्न संभागों के बच्चों का स्वागत गीत गा कर स्वागत किया गया इस उपरांत केंद्रीय विद्यालय संगठन देहरादून संभाग की सहायक आयुक्त श्रीमती अलका गुप्ता द्वारा बच्चों को विस्तृत रूप से सीमा दर्शन की जानकारी दी गई जैसे हम कार्यक्रम किस किस तरह सैनिक एवं जनमानस सरहदों पर अपना जीवन यापन कैसे करते हैंस्वागत कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कैप्टन निखिल कोटवाल सीमा दर्शन कार्यक्रम के महत्व को बच्चों के साथ साझा किया अब किस तरह हमारे वीर सैनिक सरहदों में किसी भी तरह की कठिनाइयों से लड़ते हुए अपने देश की सुरक्षा करते हैं तब जाकर हम चैन की नींद सोते हैं अंत में प्राचार्य टीपी आर्य ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया और कहा कि सीमा दर्शन जैसे कार्यक्रमों से आप अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों के साथ लड़ सकते हैं और कैसे जीत सकते हैं।

केंद्रीय विद्यालय हल्द्वानी से विभिन्न संभागों के 50 बच्चों एवं शिक्षक सीमा दर्शन कार्यक्रम के लिए लेफ्टिनेंट कर्नल श्री भारद्वाज जी एवं विद्यालय के प्राचार्य श्री टीपी आर्य जी के नेतृत्व में हल्द्वानी से अल्मोड़ा के लिए हरी झंडी दिखाकर रवाना कर दिया गया हल्द्वानी से 45 किलोमीटर दूर परम पूजनीय बाबा श्री नीम करोली जी महाराज के दर्शन के लिए वहां रुके एवं गाइड श्री अनुप ज़ख्मोला द्वारा बच्चों को नीव कटोरी जी के बारे में विस्तार पूर्वक बताया और साथी किस तरह विश्व के प्रसिद्ध व्यवसाय एवं एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब्स किस तरह इस मंदिर के प्रति अपनी आस्था रखते हैं और बाबा नीब कटोरी जी के दर्शन करने के उपरांत उनके निजी और व्यवसायिक जीवन में अपार सफलता हासिल की।

हमारी टीम के सभी बच्चे 14-05-2019 को केंद्रीय विद्यालय रानीखेत के प्राचार्य श्री एसके जोशी के दिशा निर्देश में गोविंद वल्लभ पंत प्रशिक्षण संस्थान से नाश्ता करके पिथौरागढ़ के लिए रवाना हुए अल्मोड़ा से लगभग 9 किलोमीटर दूर पिथौरागढ़ हाईवे पर न्याय के देवता कहे जाने वाले गोलू देवता के दर्शन किए।

रात्रि प्रवास के लिए पिथौरागढ़ में हम सभी लोग आर्मी कैंप में गए वहां पर जो आर्मी के जवानों का जीवन है उस से रूबरू होने का मौका मिला सबसे बड़ी बात यह है जो मैंने देखा की आर्मी जवान वहां पर हर कार्य को समय अनुसार कर रहे थे जो लिस्ट में दी गई थी कार्यक्रमों की सभी कार्यक्रम समय पर हो रहे थे 6:00 बजे वाला कार्यक्रम 6:00 बजे 7:00 वाला कार्यक्रम 7:00 बजे कोई भी कार्यक्रम ऐसा नहीं था जो 1 मिनट पहले या 1 मिनट बाद हो रहा अपने समय अनुसार सभी कार्यक्रम हो रहे थे वहां पर हमें आर्मी के हथियारों के बारे में जानने का मौका मिला और सभी हथियारों के बारे में जाना और युद्ध में जब सभी गोलियां जवानों के पास खत्म हो जाती है

तो दुश्मन पर हमारे जवान कैसे पार करते हैं वह भी जानने का मौका मिला और वहां पर जलपान की व्यवस्था सराहनीय थी इसके बाद हमारी टीम धारचूला के लिए रवाना हुई और वहां पर भी हमें आर्मी कैंप में जाने का मौका मिला वहां पर हमें सभी हथियारों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी मिली मंदिर में घूमने का अवसर मिला सेना के घोड़े देखने का अवसर मिला और किस तरह से सेना तंबू और कैंप में अपना जीवन व्यतीत करती है यह देखने का अवसर मिला ।

उसके बाद हमारी टीम नेपाल के दार्चुला के लिए रवाना हुई वहां पर हमने नेपाल भारत मैत्री भवन देखा और नेपाल में किस तरीके से लोग जीवन व्यतीत करते हैं यह रूबरू होने का मौका मिला और हर प्रकार से नेपाल और भारत भाई भाई है वहां पर हमारे यहां की लड़कियों की शादी होती है और यहां पर उनके वहां की लड़कियों की शादी होती है यह हमें वहां के नागरिकों से पता चला हमने वहां के नागरिकों से पूछा बे बोलते हैं ऐसा लगता ही नहीं कि यह जो देश है हमें तो ऐसा लगता है परिवार है।

मेरे प्यारे दोस्तों मेरा यह भ्रमण अब तक का सबसे अच्छा भ्रमण रहा क्योंकि यहां पर हमें अपने सैन्य शक्ति जानकारी पाने का अवसर प्राप्त हुआ और देवों की भूमि कहे जाने वाली उत्तराखंड में लोग कैसे जीवन व्यतीत करते हैं ?यह जानने का मौका मिला।

हमारी यह पूरी यात्रा पहाड़ों पर हुई और पहाड़ों पर जो खेती होती है जो खाना होता है और जो लोग रहते हैं उनसे जब बातचीत की तो वह बताते हैं कि हम बहुत ज्यादा कठिनाइयों में रहते हैं परंतु हमें जो हौसला प्राप्त होता है वह हमारे सैनिकों से होता है कि वह भी तो इसी माहौल और इसी मौसम और इन्हीं पहाड़ों पर रह रहे हैं हम भी उन्हें देखकर अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करते हुए देश के अलग-अलग शहरों में यहां पर उगाए जाने वाली फसलें पहुंचाते हैं और देश को पहाड़ों से अनेक जड़ी बूटियां देते हैं। कुछ जड़ी बूटियां ऐसी हैं जो इन्हीं पहाड़ों पर मिलती है ,वह धरातल पर नहीं मिलती है।

अंकित बालियान
कक्षा- बारहवीं ब
प्रथम पाली

गुरु.....

अज्ञान को मिटा कर,
ज्ञान का दीपक जलाया है
गुरु कृपा से मैंने,
ये अनमोल शिक्षा पाया ह...

जल जाता है वो दिए की तरह ...
कई जीवन रोशन कर जाता है...
कुछ इस तरह से गुरू ,
अपना फ़र्ज़ निभाता है ...

गुमनामी के अन्धेरे मे था
पेहचान बना दिया
दुनिया के गम से मुझे
अनजान बना दिया
उनकी एसी कृपा हुई
गुरु ने मुझे एक अच्छा
इंसान बना दिया....

गुरु बिना शिक्षा कहां
उसके ज्ञान का आदि न अंत यहां
गुरु ने दी शिक्षा जहां
उठी शिष्टाचार की मूरत वहां ...

सिम्पल सोम
कक्षा- बारहवी "ब" प्रथम पाली

मनोविज्ञान से जुड़े रोचक तथ्य

1. हमारे शरीर की हर कोशिका पर हमारे विचारों का प्रभाव पड़ता है।यदि विचारों में नकारात्मकता ज़्यादा है तो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है।इसके विपरीत यदि हमारे अधिकतर विचार सकारात्मक है तो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है।

2. आप जिस तरह का संगीत सुनते हैं बिल्कुल उसी नज़रिये से आप जीवन को देखते है।इसीलिए अपने संगीत का चुनाव सोच समझकर करें।

3. जो लोग दूसरों की मदद करके खुशी महसूस करते हैं वे मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ रहते हैं और उनकी उम्र लंबी होती है।

4. हमारे शरीर का दायां भाग हमारे मस्तिष्क के बाएं भाग को नियंत्रित करता है और हमारे शरीर का बयाँ भाग दिमाग के दाएं भाग को नियंत्रित करता है।

5. यदि आप किसी से बात करते समय उसके नाम का प्रयोग करते हैं, तो वह व्यक्ति आपकी बातों में ओर अधिक रुचि लेने लगता है।

6. नीला रंग एक ऐसा रंग है जो तनाव कम करता है, एकाग्रता शक्ति को बढ़ाता है और मन को शांति प्रदान करता है।

7. जब हम किसी को दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते करते है तो सभी उंगलियों के शीर्ष के संपर्क में आते है और उनपर दबाव पड़ता है तो accupressure के कारण उसका सीधा प्रभाव हमारे आंख , कान ओर दिमाग पर पड़ता है और सामने वाले को हम लंबे समय तक याद रख सकते है।

8. रेस्तरां की ब्रांडिंग में अक्सर पीले, नारंगी और लाल रंग का इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि ये रंग हमारी भूख की भावना को बढ़ाते है।

9. अगर आप अपने पसंदीदा गाने को अपना अलार्म बना लेते हैं तो आप उसको नासन्द करने लगेंगे।

10. आप वह नही हैं जैसा लोग आपको मानते हैँ, आप वह हैँ जैसा आप खुदको मानते हैं।इसीलिए हमेशा खुद पर यकीन रखें।

विधि आहूजा

कक्षा - 12 अ प्रथम पाली

लाक डाउन का समय

संभाल कर रखिए जनाब ये फ़ुरसत के लम्हें
बड़ी क़ीमत अदा कर ये दौर ए सुकूं पाया है

अपने हाथों से दे रहे थे ज़ख्म बेहिसाब
कुदरत ने तो बस आज आईना दिखाया है

सिमट आए है रिश्ते चार दिवारी में
खौफ ने ही सही, मकान को घर तो बनाया है

मुद्दतों बाद खुश है आज बूढ़ा दरख़्त
शाख से टूटे पत्तों को कोई रौंदने नहीं आया है

थम गया है शोर ए रफ़्तार जमाने का
ये कौन सा पंछी मेरे आंगन में चहचहाया है

आ भुला दे खुद को इन खामोश फिज़ाओं में
खुद को खोया जिसने उसी ने खुद को पाया है...

फातिमा ज़िकरा

कक्षा- 12वी 'ब' प्रथम पाली

प्रकृति

तुम नोचते गए उसको वो खुद को नुचवाती रही।
तुम बच्चे हो उसके बस यही सोचकर वह हर दर्द सहती रही।
बिना किसी पक्षपात के वो सबको छाव देती रही मेरी प्रकृति।।
आज सबके मुंह पर रोना क्योंकि फैल गया कोरोना ।
केवल नहीं है यह कोरोना यह है मेरी प्रकृति का रोना।।
उसके प्यार का फायदा उठाया तो अब उसके तांडव से डरो ना।
सजा मिलेगी सबको बराबर तो अब तुम कहीं छुपा ना।
धरती भी फटेगी आसमान भी गजरेगा प्रकृति को रुलाया है तूने, मनुष्य तू देख अब तू कैसा डरेगा।।
बेजुबान जानवरों को तू मारता रहा, मेरी प्रकृति को तू नोचता रहा।
इसके प्यार का फायदा उठाया तो अब उसके तांडव से डरो ना क्योंकि फैल गया करोना क्योंकि फैल गया कोरोना।।

पीयूष संगम
कक्षा- 12वीं 'ब'प्रथम पाली

इरादा

चाहे नजर ना आये कहीं उजाला
चाहे लगा हो हर चौखट पर ताला
चाहे कहती रहे दुनिया मुझे मतवाला
भरकर नैनों में दिव्य ज्ञान ज्योति
हर गलत बात पर कलम जरूर उठाऊंगा
पर मैं दीया जरूर जलाऊंगा

चाहे रहे सदा मेरे जमाना विरूद्ध
चाहे कितनी मर्जी हो राहें अवरूद्ध
चाहे रोकने आ जाएं मुझे फरिश्ते खुद
भरकर तूफानों सा हौसला सांसो में
मैं कोशिश कर हर डूबते को बचाऊंगा
पर मैं दीया जरूर जलाऊंगा

चाहे करना पड़े मुझे खुद का खात्मा
चाहे धधकती रहें मेरी व्याकुल आत्मा
चाहे साथ ना दे मेरा दयालु परमात्मा
जिंदा हूँ जब तक जमीन पर मैं तो
हर हाल में अपना मानव धर्म निभाऊंगा
पर मैं दीया जरूर जलाऊंगा

मेरी प्यारी रूह तू मेरा साथ देना
डूबने लगूं जब मुझे अपना हाथ देना
नजर आऊं भीड़ से अलग सूरज सा
औरों से अलग मुझे कुछ तो बात देना
दर्द भरा है अपनों की खातिर दिल में इतना
के सांसे है जब तक,तब तक प्रेम गीत गाऊँगा
पर मैं दीया जरूर जलाऊंगा |

अरीन फातिमा
कक्षा- 12 ब प्रथम पाली

मेरी माँ

1 - मेरी माँ मेरी महोब्बत, मेरा गुरूर, मेरा सुरूर है ।
मुझे गुमान है अपनी माँ पे ,असी होगी ना कही ।
माँ आज तक तुने जो सीखाया, वो एक एक बात बिलकुल सही ।

2 - माँ तू ही मेरी पहचान है , माँ तु ही मेरा सम्मान ।
माँ तुझी से मेरी सुबह , माँ तुझी से मेरी श्याम है ।

3 - माँ करती तु दिन भर काम है । ना करती कभी आराम है।
अब क्या - क्या कहु तेरे बारे मे माँ ।
तुझे मेरा बार - बार सलाम है ,बार-बार सलाम है।

देवराज राणा

कक्षा- 12 ब प्रथम पाली

बचपन

एक बचपन का जमाना था ,
जिस में खुशियों का खजाना था...
चाहत चांद को पाने की थी ,
पर दिल तितली का दिवाना था...
खबर ना थी कुछ सुबह की ,
ना शाम का ठिकाना था...
थक कर आना स्कूल से ,
पर खेलने भी जाना था...
मां की कहानी थी ,
परियों का फसाना था...
बारिश में कागज की नाव थी ,
हर मौसम सुहाना था...

हमजा खान,

कक्षा- बारहवीं 'ब' प्रथम पाली

मधुर वचन

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है।

विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है।

उपयोग ने हो तो धन व्यर्थ है।

साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है।

भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है।

होश न हो तो जोश व्यर्थ है।

परोपकार न करने वाले का तो जीवन ही व्यर्थ है।।

अंकित बालियान

कक्षा- 12वीं ब प्रथम पाली

ऑनलाइन शिक्षण पर स्लोगन.....

ऑनलाइन पढ़ोगे , तब ही खुद को और समय को बचा पाओगे ।।

नव्या जैन

कक्षा – पांचवीं ब प्रथम पाली

कोरोना से हमारी पढ़ाई का हुआ है जो नुकसान ।

ऑनलाइन करके पढ़ाई , भविष्य में लायेंगे मुस्कान ।।

नाजिआ

कक्षा- पांचवीं ब प्रथम पाली

यदि नहीं होना चाहते क्वारेंटाइन,

तो पढ़ना होगा ऑनलाइन ।

अनुपम गोस्वामी

कक्षा – तृतीय अ प्रथम पाली

1. ऑनलाइन पढ़ना है जरूरी,
तभी जरूरते होगी पूरी..
2. ऑनलाइन पढ़ाई है एक अभियान,
बनाये सफल और महान..

अरनव कहमार

कक्षा – आठवीं अ प्रथम पाली

कोरोना बीमारी बुरी, इसको लो तुम जान ।
ऑनलाइन शिक्षण करो,
योग और नित ध्यान ।।

नेहा गौतम

कक्षा - ग्यारहवीं ब प्रथम पाली

घर मे बैठे क्या करे,पर सुरक्षा भी है अपने हाथ।
समय के सदुपयोग से ऑनलाइन पढ़ हम बनेंगे विद्वान।।

श्वेता गोगालिया

कक्षा- सातवीं 'ब' प्रथम पाली

1- गुरु का सर पर हाथ हो, ऑनलाइन का साथ हो।
2- कोरोना से लड़ेंगे, ऑनलाइन ही पड़ेंगे।
3- भारतवासी महान है,ऑनलाइन आसान है
4- कोविड को भगाऐगे, ऑनलाइन अपनाएंगे।
5- उज्जवल भविष्य की एक ही भाषा,ऑनलाइन पर टिकी है आशा।
6- कोरोना को भगाना है, ऑनलाइन अपनाना है।

आशुतोष कौशिक

कक्षा -छह अ प्रथम पाली

कोरोना के काल में, नवाचार इस बार ।
ऑनलाइन शिक्षण रूप में,
विद्यालय आपके द्वार ।।

ओम प्रकाश गोस्वामी
स्नातकोत्तर शिक्षक प्रथम पाली

मैं आज "मैं" होना चाहती हूँ

बिन सफर, बिन मंज़िलों का
एक रास्ता बनना चाहती हूँ।

कही दूर किसी जंगल में,
ठहरा दरिया होना चाहती हूँ।

एक ज़िन्दगी होना चाहती हूँ
बिना रिश्तें रिवाजों की।

दूर आसमान से गिरते,
झरने में कही खोना चाहती हूँ।

मैं आज "मैं" होना चाहती हूँ....।

प्रेरणा
कक्षा- ग्यारहवीं ब प्रथम पाली

मोबाइल फोन मुसीबत या सहायक

दुनिया के पहले मोबाइल फोन का निर्माण मार्टिन कूपर नाम के एक इंजीनियर द्वारा किया गया था। जिसे उन्होंने 13 अप्रैल 1973 को दुनिया के सामने प्रकाशित किया था।आज के युग में विज्ञान के नए नए आविष्कारों से हमारे जीवन में बहुत से बदलाव आ चुके है। मोबाइल फोन हमारे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं है। शुरुआत में तो यह सिर्फ बातचीत करने के काम आता था लेकिन आजकल तो इसमें संदेश भेजना, वीडियो बनाना, खरीदारी करना, पढ़ाई आदि चीजों के लिए उपयोग किया जाता है।हालांकि यह हमारे जीवन को बहुत आसान बना रहा है परंतु इसकी कुछ खामियां भी हैं। बच्चे मोबाइल का उपयोग बहुत ज्यादा कर रहे हैं जिसकी वजह से उन्हें कम उम्र में चश्मा लगाना और अन्य शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। अधिक समय मोबाइल में बिताने के कारण हम अपने

परिवार रिश्तेदारों से भी दूर होते जा रहे हैं। फेसबुक ,ट्विटर , व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम जैसी सामाजिक मीडिया ने बच्चों और बड़ों को अपनी तरफ आकर्षित किया है। इसलिए हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम मोबाइल फोन का उपयोग कब करें और हमें इसका प्रयोग एक संतुलित प्रकार से करना चाहिए जिससे यह हमारे लिए सहायक बने मुसीबत नहीं।

मुस्कान मित्तल

कक्षा- ग्यारहवीं अ

पृथ्वी

पृथ्वी पालन करती है सबका,
इसे स्वच्छ रखना कर्तव्य हमारा ।

पेड़-पौधों से इसकी सुन्दरता,
पानी इसका अनमोल रतन ।

करो ना पानी तुम बेकार,
सुन्दर सबके हों विचार ।

खूब सारे पेड़ लगाओ,
और सबका जीवन बचाओ ।

क्योंकि पृथ्वी है सबका परिवार ।

अनुराग गोस्वामी

कक्षा- प्रथम

प्रथम पाली

गुरु

गुरु है तो विश्वास है,
गुरु है तो सब पास है,
गुरु से ही आस है,
गुरु जो अपने पास है,

तो मंजिल की क्या बात है,
एक सुंदर सा एहसास है,
ना हो कोई लक्ष्य अधूरा,
सब कुछ अपने हाथ हैं,

गुरु सुंदर साज है,
गुरु शिष्य का सरताज है,
गुरु वो जो कभी मन की ना होने दें शाम है...
गुरु के चरणों को शत-शत प्रणाम है...

वर्निका तोमर
कक्षा- ग्यारहवीं ब प्रथम पाली

मिलकर कोरोना को हराना है (कविता)

दूरी है दूरी है, अभी सबसे दूरी हैं।
पास न जाना तुम,ये बेहद जरूरी हैं।
एक ही कमरे में, ये दुनिया पुरी हैं।
जान से भी ज्यादा, पैसा क्या जरुरी है?

मिलकर कोरोना को हराना है,
घर से हमें कहीं नहीं जाना है,
हाथ किसी से नहीं मिलना है,
चहरे से हाथ नहीं लगाना है,

बार-बार अच्छे से हाथ धोने जाना है,
सेनेटाइज करके देश को स्वच्छ बनाना है,
बचाव ही इलाज है यह समझाना है,
कोरोना से हमकों नहीं घबराना है,

सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है,
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है।

सौम्या भारद्वाज
कक्षा- नवमीं ब
प्रथम पाली

डरते क्यों हो!!

कोने में बैठ कर क्यों रोता है,
यू चुप चुप सा क्यों रहता है।

आगे बढ़ने से क्यों डरता है,
सपनों को बुनने से क्यों डरता है।

तकदीर को क्यों रोता है,
मेहनत से क्यों डरता है।

झूठे लोगो से क्यों डरता है,
कुछ खोने के डर से क्यों बैठा है।

हाथ नहीं होते नसीब होते है उनके भी,
तू मुट्ठी में बंद लकीरों को लेकर रोता है।

भानू भी करता है नित नई शुरुआत,
सांज होने के भय से नहीं डरता है।

मुसीबतों को देख कर क्यों डरता है,
तू लड़ने से क्यों पीछे हटता है।

किसने तुमको रोका है,
तुम्ही ने तुम को रोका है।

भर साहस और दम, बढ़ा कदम,
अब इससे अच्छा कोई न मौका है।

जया पुण्डीर
कक्षा- ग्यारहवीं 'अ'
प्रथम पाली

मेरी मां

अच्छी , सच्ची प्यारी मां ,
सबसे न्यारी मेरी मां ।

मेरी मां मेरा भगवान,
मेरा जीवन मां का दान ।

मां की सेवा मेरा काम,
मां का सपना मेरा नाम।

मैं मां का अनमोल रतन,
मां का प्यार मेरा धन ।

अनुपम गोस्वामी
कक्षा- तृतीय अ
प्रथम पाली

दूरी.....

दूरी है दूरी है, अभी सबसे दूरी हैं।
पास न जाना तुम,ये बेहद जरूरी हैं।
एक ही कमरे में, ये दुनिया पुरी हैं।
जान से भी ज्यादा, पैसा क्या जरुरी है?

मिलकर कोरोना को हराना हैं।
घर से हमें कहीं नहीं जाना हैं।
हाथ किसी से नहीं मिलाना हैं।
चेहरे पर हाथ नहीं लगाना हैं।

बार-बार अच्छे से हाथ धोने जाना हैं।
सेनेटाइज करके देश को स्वच्छ बनाना हैं।
बचाव ही इलाज है ये समझाना हैं।
कोरोना से हमको नहीं घबराना हैं।

सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना हैं।
देशहित में सभी को यह कदम उठाना हैं।

नैना धीमान
कक्षा- नवमीं ब
प्रथम पाली

वृक्षारोपण

हमारे देश भारत की संस्कृति. एवं सभ्यता वनों में ही पल्लवित तथा विकसित हुई है यह एक तरह से मानव का जीवन सहचर है वृक्षारोपण से प्रकृति का संतुलन बना रहता है वृक्ष अगर ना हो तो सरोवर (नदियां) में ना ही जल से भरी रहेंगी और ना ही सरिता ही कल कल ध्वनि से प्रभावित होंगी वृक्षों की जड़ों से वर्षा ऋतु का जल धरती के अंक में पोहचता है, यही जल स्त्रोतों में गमन करके हमें अपर जल राशि प्रदान करता है वृक्षारोपण मानव समाज का सांस्कृतिक दायित्व भी है, क्योंकि वृक्षारोपण हमारे जीवन को सुखी संतुलित बनाए रखता है। वृक्षारोपण हमारे जीवन में राहत और सुखचैन प्रदान करता है।

“वृक्षारोपण से ही पृथ्वी पर सुखचैन है
इसे लगाओ जीवन का एक महत्वपूर्ण संदेश है.”

संस्कृति और वृक्षारोपण

भारत की सभ्यता वनों की गोद मे ही विकासमान हुई है। हमारे यहां के ऋषि मुनियों ने इन वृक्ष की छांव में बैठकर ही चिंतन मनन के साथ ही ज्ञान के भंडार को मानव को सौपा है। वैदिक ज्ञान के वैराग्य में, आरण्यक ग्रंथों का विशेष स्थान है वनों की ही गोद में गुरुकुल की स्थापना की गई थी। इन गुरुकुलो में अर्थशास्त्री, दार्शनिक तथा राष्ट्र निर्माण शिक्षा ग्रहण करते थे इन्ही वनों से आचार्य तथा ऋषि मानव के हितों के अनेक तरह की खोजें करते थे ओर यह क्रम चला ही आ रहा है। पशियो चहकना, फूलो का खिलना किसके मन को नहीं भाता है इसलिए वृक्षारोपण हमारी संस्कृती में समाहित है।

हमारे भारत देश में जहां वृक्षारोपण का कार्य होता है वही इन्हें पूजा भी जाता है। कई ऐसे वृक्ष है, जिन्हें हमारे हिंदू धर्म में ईश्वर का निवास स्थान माना जाता है, जैसे नीमका पेड़, पीपल का पेड़, आंवला, बरगद आदी को शास्त्रों के अनुसार पूजनीय कहलाते है और साथ ही धर्म शास्त्रों में सभी तरह से वृक्ष प्रकृति के सभी तत्वों की विवेचना करते हैं। जिन वृक्ष की हम पूजा करते है वो औषधीय गुणों का भंडार भी होते हैं, जो हमारी सेहत को बरकरार रखने में मददगार सिद्ध होते है। आदिकाल में वृक्ष से ही मनुष्य की भोजन की पूर्ति होती थी, वृक्ष के आसपास रहने से जीवन में मानसिक संतुलन ओर संतुष्टि मिलती है गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं।

” मूलतः ब्रह्मा रूपाय मध्यतो विष्णु रुपिनः
अग्रतः शिव रूपाय अश्वव्याय नमो नमः.”

अर्थात- इसके मूल रूप में ब्रह्मा मध्य में विष्णु ओर अग्र भाग में शिव का वास होता है, इसी कारण अश्व्यय नामधारी वृक्ष को नमन किया जाता है।

वनों से लाभ

वनों से हमे भवन निर्माण की सामग्री मिलती है औषधीय, जड़ी बूटियां, गोंद, घास, तथा जानवरों का चारा भी वनों से ही प्राप्त होता है।वन तापमान को सामान्य बनाने में सहायक एवं भूमि को बंजर होने से रोकता है वनों से लकड़ी, कागज, फर्नीचर, दवाईया, सभी के लिए हम वनों पर ही निर्भर है। वन हमे दूषित वायु को ग्रहण करके शुद्ध एवं जीवन दायक वायु प्रदान करता है, जितनी वायु और जल जरूरी है उतना ही आवश्यक वृक्ष होते हैं इसलिए वनों के साथ ही वृक्षारोपण सभी जगह करना जरूरी है और कई तरह के लाभ देने वाले वनों की रक्षा करना हमारा कर्तव्य।

वनों के कटने से कई तरह की हानियां

आज मानव अपनी भौतिक प्रगति की तरफ आतूर है वह अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए बेधड़क वृक्षों की कटाई कर रहा है ओधोगिक प्रतिस्पर्धा और जनसंख्या के चलते बनो का क्षेत्रफल प्रतिदिन घटता जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार एक करोड़ हेक्टेयर इलाके के वन काटे जाते हैं, अकेले भारत में ही 10 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में फैले बनो को काटा जा रहा है, वृक्ष के कटने से पक्षियों का चहचहाना भी कम होता जा रहा है, पक्षी प्राकृतिक संतुलन स्थिर रखने में प्रमुख कारक है, परंतु वृक्षों की कटाई से तो वो भी अब कम ही दिखने लगे हैं, अगर इसी तरह से वृक्ष की कटाई होती रही तो इसके अस्तित्व पर ही एक प्रश्न चिन्ह लग जाएगा।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

हमारे देश भारत में वृक्षारोपण के लिए कई संस्थाएं, पंचायती राज संस्थाएं, राज्य वन विभाग, पंजीकृत संस्था, कई समितिया ये सब वृक्षारोपण के कार्य कराती हैं कुछ संस्थाओं तो वृक्ष को गोद लेने की परंपरा कायम कर रही है, शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी वृक्षारोपण को भी स्थान दिया गया है, पेड़ लगाने वाले लोगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए आज हमें ए.के. जोन्स की तरह ही वृक्षारोपण का संकल्प लेने की आवश्यकता है।

: आज हमारे देशवासी वनों तथा वृक्षों की महत्ता को एक स्वर से स्वीकार कर रहे हैं वन महोत्सव हमारे राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है, देश की समृद्धि में हमारे वृक्ष का भी महत्वपूर्ण योगदान है इसलिए इस राष्ट्र के हर नागरिक को अपने लिए और अपने राष्ट्र के लिए वृक्षारोपण करना बहुत जरूरी है।

नैना धीमान

कक्षा-नवमीं ब

प्रथम पाली

वृक्षों की दास्तां.....

ए वृक्ष! मेरे साथी-
क्या यही है दास्तां तेरी?
दिया जिसने जीवन दान सभी को-
क्या यही है नियति तेरी?

पत्ते, लकड़ी, फल- फूल सभी कुछ,
जीवन जीने का उपहार दिया।
प्रकृति का नूर है तू ही-
मानव जीवन साकार किया!

क्यों यह मनुष्य समझता नहीं है,
क्यों बना है तेरा दुश्मन?
नहीं जानता यह मानव अब भी-
अन्धकार अपना बुन रहा है खुद।

जब नहीं थे ये अनमोल वृक्ष धरती पर-
क्या जीवन संभव हो पाया था।
वृक्षों के अस्तित्व में आने पर भी-
करोड़ों सालों बाद मानव जन्म पाया था।

नादानी के इस अंधेरे में-
अपना जीवन खो जाएगा।
आज तो लगा है वृक्ष मारने तू मनुष्य-
अपना कल नहीं देख पाएगा तू!

श्रेया सैनी
कक्षा-12वी 'अ'

अमृत वाणी.....

गुरू आपकी अमृत वाणी
हमेशा मुझको याद रहे
जो अच्छा है जो बुरा है
उसकी हम पहचान करें!
मार्ग मिले चाहे जैसा भी
उसका हम सम्मान करे!

पाठ तुम्हारा याद रहे
अच्छाई और बुराई का
जब भी हम चुनाव करे
गुरु आपकी ये अमृत वाणी
हमेशा मुझको याद रहे!

साक्षी सैनी
12वी 'ब'
प्रथम पाली

वृक्षारोपण की आवश्यकता

वृक्ष हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है पर्यावरण संतुलन एवं मानव की वास्तविक प्रगति के लिए वृक्ष रोपण आवश्यक है वृक्ष हमारे लिए कई प्रकार से लाभदायक होते हैं जीव द्वारा छोड़े गए कार्बन डाइऑक्साइड को जीवनदायिनी ऑक्सीजन में बदल देते हैं वृक्षों के द्वारा हमें विभिनन की औषधियां प्राप्त होती है वृक्ष हमें छाया प्रदान करते हैं वृक्ष जहां पर्याप्त मात्रा में होते हैं वहां वर्षा की मात्रा भी सही होती है मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक वृक्षों एवं उनसे प्राप्त होने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर निर्भर रहता है औद्योगीकरण के कारण वैश्विक स्तर पर तापमान में वृद्धि हुई है फल स्वरूप विश्व की जलवायु में प्रतिकूल परिवर्तन हुआ है साथ ही समुद्र का जल स्तर उठ जाने के कारण आने वाले वर्षों में कई देशों एवं शहरों की समुद्र में जल मग्न हो जाने की संभावना है तथा जलप्रदूषण ,वायु प्रदूषण ,भूमि प्रदूषण, एवं ध्वनि प्रदूषण में निरंतर वृद्धि हो रही है यदि इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो परिणाम अत्यंत भयानक होंगे इन सभी कारणों को देखते हुए वृक्षारोपण की अत्यंत आवश्यकता है आज हमें वृक्षारोपण के कार्यक्रमों को

प्रोत्साहन देने की अंत्यत आवश्यकता है इसके लिए लोगों को वृक्षों से होने वाले लाभों से अवगत कराकर उन्हें वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करना होगा शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी वृक्षारोपण को पर्याप्त स्थान देना होगा प्रदूषण को कम करने एवं पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए वृक्षारोपण अत्यंत आवश्यकता है।

परिशा चौधरी

कक्षा- बारहवीं ,ब

प्रथम पाली

माँ.....

मां तो जन्नत का फूल है,
प्यार करना उसका उसूल है ।
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है,
मां की हर दुआ कबूल है ।
ऐ इंसान मां को नाराज करना तेरी भूल है,
मां के कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है ।
मां तो जन्नत का फूल है ।।

श्रेया त्यागी

कक्षा- आठवीं अ

प्रथम पाली

टमाटर

लाल टमाटर लाल टमाटर,
मैं तो तुमको खाऊँगा,
अभी न खाओ मै खुद्द दिन में,
और अधिक पक जाऊँगा |

लाल टमाटर लाल टमाटर,
मुझे भूख लगी भारी,

भूख लगी तो तुम खालो ,
यह गाजर मूली सारी।

लाल टमाटर लाल टमाटर,
मुझको तो तुम भाते हो,
तुमको जो अच्छा लगता है,
उसको तुम क्यों खाते हो|

लाल टमाटर लाल टमाटर,
अच्छा तुम्हें न खाऊंगा,
मगर तोड़कर डाली परसे,
अपने घर ले जाऊँगा|

लावण्या
कक्षा चतुर्थ- ब
प्रथम पाली

शिक्षक का अर्थ

शि - शिखर तक ले जाने वाला |

क्ष - क्षमा की भावना रखने वाला |

क - कमजोरी दूर करने वाला |

अर्थात

जो विद्यार्थी की हर गलती
को क्षमा करने की भावना रखता हैं और उसकी हर
कमजोरी दूर कर उसको शिखर (सफलता) तक ले जाता है।
वही सच्चा शिक्षक कहलाता है।

दिनेश त्यागी
कक्षा VIII B प्रथम पाली

"कोरोना काल कविता"

पहले छुट्टियो का इंतजार होता था,
मिलने के लिए सबका दिल बेकरार होता था
अब हाल कुछ यूँ हैं कि छुट्टियां खत्म होने का इंतजार होता है,
दोस्तों से क्या किसी से भी मिलना बदहाल होता है ,
मिलनसार व्यवहार जरा अब कम करो,
कोरोना है भाई थोड़ा तो डरो |
सुरक्षित घर पर रहो और स्वास्थ्य नियमों का पालन करो!!!!

अर्नव नाथ
कक्षा VIIIA प्रथम पाली

यात्रा साहित्य

साहित्य मनोवृति का घुमक्कड है। जब सौन्दर्य बोध की दृष्टि से उल्लास भावना से प्रेरित होकर यात्रा करता है,और उसकी मुक्त भाव से अभिव्यक्ति करता है। उसे यात्रा साहित्य/यात्रावृतांत कहते हैं।

मानव प्रकृति व सौन्दर्य का प्रेमी है। वह साहित्य की भांति घुमक्कड स्वभाव का है, जहां भी जाता है वहां से साहित्य की भांति कुछ-ना-कुछ ग्रहण करता है। उसके द्वारा ग्रहण किये गए प्रेम, सौन्दर्य, भाषा, स्मृति आदि को अपने शुद्ध मनोभावों से प्रकट करता है।

जो साहित्य में समाहित होकर एक नई विद्या का रूप ले लेता है।

मानव प्रकृति व सौन्दर्य का प्रेमी है। वह साहित्य की भांति घुमक्कड स्वभाव का है , जहाँ भी जाता है। वहां से साहित्य की भांति कुछ न-कुछ ग्रहण करता है। उसके द्वारा ग्रहण किये गये प्रेम, सौन्दर्य, भाषा को अपने शुद्ध मनोभावो से प्रकट करता है।

वंशकुमार
कक्षा VIII A
प्रथम पाली

शिक्षा

बहुत जरुरी होती है शिक्षा ,
सरे अवगुण धोती शिक्षा,
चाहे जितना पढ़ ले हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा,
शिक्षा पाकर हे बनते है ,
नेता , अफ़सर , शिक्षक ,
वैज्ञानिक, मंत्री , व्यापारी
या साधारण रक्षक ,
कर्तव्यों का बोध कराती ,
अधिकारों का ज्ञान ,
शिक्षा से ही मिल सकता है ,
सर्वोपरि सम्मान ,
बुद्धिहीन को बुद्धि देती ,
अज्ञानी को ज्ञान ,
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान ,

इशिका शर्मा
कक्षा चतुर्थ ब
प्रथम पाली

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों से रेंगते -रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ,

काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है ,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,

प्यार ये तेरा कैसा है?

सीधा-साधा, भोला-भाला

मै ही सबसेअच्छा हूँ।

कितना भी हो जाऊं बड़ा

माँ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

शौर्य

कक्षा VII A प्रथम पाली

माँ

मेरी माँ! वो खुशी है जो कोई न दे सके |

मेरी माँ! वो हँसी है जो कभी न मिट सके |

मेरी माँ! वो कमी है जो दूर होकर हमेशा खले |

मेरी माँ! वो परी है जो खुदा को सुन सके।

वो जो बातों –बातों में जन्नत की सैर कराती है |

वो जो गोद में लेकर अनन्य प्यार जताती है।

वो जिसकी बाँहों में सुकून का एहसास मिलता है |

वो जो इन बचकानी आँखो का सबसे खूबसूरत नजारा है।

मेरी माँ! वो समां जहाँ चैन के बादल हैं।

मेरी माँ! वो जहाँ है , जहाँ प्यार की बारिश है |

मेरी माँ! वो घटा है, जो गलती पर बरसती है |

मेरी माँ! वो राह है , जो हमेशा मदद करती है।

वो जिसकी में ताकत सबसे ज्यादा है।

वो जिसकी ममता का कायल ही खूदा है।

वो जिसकी बातें उस ईश्वर से होती हैं।

वो जिसके माध्यम से बंदा खुदा से जुड़ा है।

पूछो तो जरा उस से भी,

जिसकी माँ साथ न हो !

वह एक पत्थर-सा दर्द सीने में लिए है,

जिसके पास माँ का हाथ न हो।

अनमोल रत्न मिला है सबको,
कद्र करो जरा इस ममता की ।
राहें कठिन हो जाती है जिंदगी की,
जब नहीं होती है माँ साथ किसी की !!

श्रेया सैनी

कक्षा XII A प्रथम पाली

कोविड-19

कैसा यह खतरे का पहर है,
आज हवाओं में भी जहर है ,
कही भी देखो बात यही है,
हाय भयानक रात यही है
मौत के साय मे हर घर है
कब क्या होगा किसे खबर है ,
बंद है खिड़की बंद है द्वारे,
बैठे है सब डर के मारे
क्या होगा इस बेचारों का
क्या होगा इस लाचारों का,
इनका सब कुछ खो सकता है,
इन पर हमला हो सकता है
कोई रक्षक नजर आता,
सोया है आकाश का दाता
यह क्या हाल हुआ अपने संसार का,
निकल रहा है आज जनाजा प्यार का।

भवनेश कुमार

कक्षा नवमीं ब

प्रथम पाली

कोरोना कविता

मिलकर कोरोना को हराना है ,
घर से कही नही जाना है,
हाथ किसी से नही मिलाना हैं,
चहरे से हाथ नहीं लगाना है ,
बार - बार अच्छे से हाथ धोने जाना है,
सेनेटाईज करके देश को स्वच्छ बनाना है,
बचाव ही इलाज है यह समझाना है ,
कोरोना से हमको नहीं घबराना है ,
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है ,
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है |

आर्यन भार्गव
कक्षा V B
प्रथम पाली

गुरु नियति

उलझी हुई लता को सुलझाने की काबिलियत रखते हैं,
वो है गुरु !!
जो बिखरी हुई लता को संवारने की अहमियत रखते है,
वो है गुरु !!
जो उज्जवल भविष्य बनाने की नियति रखते हैं,
वो है गुरु !!
जो डूबते को किनारा दिखाते है ,
वो है गुरु !!
जो हर विद्यार्थी के जीवन को सँवारने की पवित्रता रखते है,
वो है गुरु !!

अरविंद कुमार राना
कक्षा- V B प्रथम पाली

पेड़

हमें न काटो, हमें न छांटो ,
जहर जमाने को न बाँटों ।
ठंडी- ठंडी छाया देते ,
कोई नही किराया लेते |
तुमने यदि वन काटे भैया,
नहीं चलेगी फिर पुरवइया |
हमारी जड़, पत्री शाखाएँ ,
काम दवाओं में आ जाएँ ।

हार गया हर बूढ़ा-बच्चा,
पर्यावरण हमसे ही अच्छा |
हम न हो तो पर्वत टूटे,
ताल-नदी की किस्मत फूटे |
बिना हमारे ढहती मेढ,
हमको सब कहते हैं पेड़ ||

दानिश
कक्षा बारहवीं ब'
प्रथम पाली

सच्ची मनुष्यता

- सत्य जिनका मन हैं तप जिनकी आत्मा है |
- विद्या जिनकी वाणी है ज्ञान जिनका कर्म है |
- दया जिनका धर्म है सेवा जिनकी माता है |
- धर्म जिनका पिता है सहयोग जिनका भाई है |
- पुरुषार्थ जिनका पुत्र है धैर्य जिनका मित्त है |
- भाग्य जिनका साथी है साहस जिनका शस्त्र है |
- प्रभु भक्ति जिनका जीवन है ऐसे महापुरुष इस संसार में यदा कदा ही मिलते हैं |

अदिति शर्मा कक्षा XII B प्रथम पाली

कोरोना क्या है ?

मनुष्य का अन्धा स्वार्थ है.....कोरोना

प्रकृति का अभिशाप है.....कोरोना

कटते पेड़ों की चीख है.....कोरोना

बेघर होने वाले जानवरों का दर्द है.....कोरोना

विश्व में होता विनाश है.....कोरोना

लाशों का बेहता सैलाब है.....कोरोना

और अगर अब भी हम नहीं रुके ना तो बुझता चिराग है .....कोरोना

प्रकृति, पेड़-पौधे, जानवर अब भी कह रहे बस करोना वरना, मिटता संसार है.....कोरोना

गुंजन

कक्षा XII B प्रथम पाली

हौसलों की उड़ान

मुश्किलों से भाग जाना आसान होता है,
हर पहल जिंदगी का इम्तिहान होता है ,
डरने वालों को मिलता नहीं कुछ जिंदगी में,
लड़ने वालों के क़दमों में जहान होता है |

हारता जो नहीं मुश्किलों से कभी,
जिसका मकसद है मंजिल को पाना ,
धूप में देखकर थोड़ी सी छाया ,
आग जिसमें लगन की जलती है ,

कामयाबी उसी को मिलती है ,
न पूछों कि मंजिल कहा है ,
अभी तो सफ़र का इरादा किया है ,
ना हारेंगे , हौसला उम्र भर,

किसी और से नहीं खुद वादा किया है ,

हर पल तेरा नाम होगा ,

तेरे हर कदम में दुनिया का सलाम होगा ,

मुश्किलों का सामना हिम्मत से करना ,

देखना एक दिन वक्त भी तो गुलाम होगा ,

मंजिल उन्ही को मिलती है,

जिनके सपनो में जान होती है,

अंधेरों में आकर तो काँच भी चमका करता है ,

नजर को बादलों जनजारे बदल जायेंगे ,

मंजिल को पाना है तो कश्तियाँ मत बदलना ,

दिशा को बदलो किनारे बदल जायेंगे |

नेहा गौतम
कक्षा XIB प्रथम पाली

वृक्षारोपण

वृक्षारोपण का शाब्दिक अर्थ है। वृक्ष लगाकर उन्हें उगाना इसका प्रयोजन करना। वृक्षारोपण प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए और मानव के जीवन में सुख, समृद्धि और खुशहाली बनाए रखने हेतु बहुत ही आवश्यक है। हमें जो कुछ भी प्रकृति द्वारा मिलता रहा है उसे निरंतर प्राप्त करते रहने के लिए वृक्षारोपण अत्यधिक आवश्यक है।कई ऐसे वृक्ष हैं जिन्हें हिंदू धर्म में ईश्वर का निवास स्थान माना जाता है जैसे नीम का पेड़, पीपल का पेड़, आमला, बरगद आदि को शास्त्रों के अनुसार पूजनीय कहा जाता है।वृक्षों के द्वारा हमें खाने पीने की सामग्री , हमारे भवनों का निर्माण आदि लाभदायक चीजें प्राप्त होती हैं इसलिए हमें वृक्षारोपण को अधिक से अधिक बढ़ाना चाहिए। शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी वृक्षारोपण को विशेष स्थान दिया गया है. भावी पीढ़ी को यह संकल्प लेना चाहिए कि वृक्षारोपण को अधिक से अधिक बढ़ाएंगे। मेरे अनुसार इसे बढ़ाने का उत्तम तरीका यह है कि हम हर वर्ष अपने जन्मदिन एक वृक्ष लगाएं। उसका पालन पोषण करें। आज के तकनीकी दौर के चलते हुए वृक्षों की कटाई होती जा रही है। अगर इसी प्रकार वृक्षों की कटाई होती रही तो इसके अस्तित्व पर एक प्रश्न चिन्ह लग जाएगा। इसलिए हमें वृक्षारोपण का संकल्प लेने की आवश्यकता है।

मुस्कान मित्तल ,
कक्षा XI अ प्रथम पाली

पर्यावरण बचायें

बदलें हम तस्वीर जहाँ की

सुन्दर सा एक दृश्य बनाएं,

संदेश ये हम सब तक फैलाएं

आओ पर्यावरण बचाएं!

फ़ैल रहा है खूब प्रदूषण
काट रहा मानव जगंल वन
हवा हो रही है जहरीली
कमजोर पड़ रहा है सबका तन,

समय आ गया है कि मिलकर
हम सब कोई कदम उठाएं
संदेश ये हम सब तक फैलाएं
आओ पर्यावरण बचाएं!

रिदिम गर्ग
कक्षा XI A प्रथम पाली

जिस देश मे गंगा बहती है

होठो पर सच्चाई रहती है,
जहाँ दिल मे सफाई रहती है ।
मै उस देश की वासी हूँ,
जिस देश मे गंगा बहती है ।

मेहमां जो हमारा होता है,
वो जान से प्यारा होता है ।
ज्यादा का नही लालच हमको,
थोड़े मे गुजारा होता है ।

बच्चो के लिए जो धरती माँ,
सदियो से सब कुछ सहती है ।
मैं उस देश की वासी हूँ,
जिस देश मे गंगा बहती है ।

जो जिससे मिला सीखा हमने,
गैर को भी अपना समझा हमने ।
अब हम तो क्या सारी दुनिया ,
सारी दुनिया से कहती है ।

मैं उस देश की वासी हूँ ,
जिस देश मे गंगा बहती है ।

काजल राणा

कक्षा - 11वीं 'अ'

प्रथम पाली

सफलता

सफलता शब्द बोलने में जितना आसान है उनके पीछे उतनी ही ज्यादा मेहनत छिपी होती है। कहते हैं मंजिल उन्ही को मिलती है जिनके सपनो में जान होती है क्योंकि पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है। आज हम ऐसे ही शख्स के बारे में बताने जा रहे हैं |

कैरोली टकास हंगरी सेना के जवान थे। वह विश्व के बेहतरीन पिस्टल शूटर में से एक थे। 1938 के नेशनल गेम्स में उम्दा प्रदर्शन करते हुए उसने प्रतियोगिता जीती थी। उनके प्रदर्शन को देखते हुए पूरे देश को विश्वास हो गया था कि 1940 के ओलंपिक्स में कैरोली टकास देश के लिए गोल्ड मैडल जीतेगा। लेकिन कहते है जो किस्मत में लिखा होता है उसे कौन बदल सकता है। ऐसा ही कैरोली के साथ हुआ। 1938 के नेशनल गेम्स के तुरंत बाद, एक दिन आर्मी कैंप में कैरोली के उसी सीधे हाथ में ग्रेनेड फट जाता है जिसे कैरोली शूटिंग के लिए बचपन से ट्रेंड किया था, वो हाथ हमेशा के लिए शरीर से अलग हो जाता है और उनका ओलंपिक्स गोल्ड मैडल का सपना ख़त्म हो गया।

लेकिन कैरोली के लिए ये आखिरी मुकाबला नहीं था, उसने हार नहीं मानी। उसे अर्जुन की तरह अपने लक्ष्य के अलावा कुछ नज़र नहीं आ रहा था। इसलिए उसने बिना किसी को बताए अपने लेफ्ट हैण्ड से शूटिंग प्रैक्टिस शुरू दी। इसके लगभग एक साल बाद 1939 के नेशनल गेम्स में वो लोगो के सामने आकर सबको आश्चर्य में डाल देता है। शुरू में प्रतिभागी उसका इस तरह से मजाक बनाते हैं कि कैरोली उनका हौसला बढ़ाने के लिए आया है। लेकिन जब पता चला कि वो प्रतियोगिता में हिस्सा लेने आया है और उसे गेम्स में

भाग लेने की इज़ाज़त मिल चुकी है, तो सब हैरत में पड़ जाते हैं। कैरोली पिस्टल न केवल शूटिंग में भाग लेता है और बल्कि गोल्ड मैडल भी जीत लेता है।

कैरोली द्वारा गोल्ड मैडल पर निशाना लगाने के बाद लोग अचंभित रह जाते है, आखिर ये कैसे हो गया। जिस हाथ से वो एक साल पहले तक लिख भी नहीं सकता था, उसे उसने इतना ट्रेन्ड कैसे कर लिया की वो गोल्ड मैडल जीत गया। पूरे हंगरी को फिर विश्वास हो गया की 1940 के ओलंपिक्स में पिस्टल शूटिंग का गोल्ड मैडल कैरोली ही जीतेगा। पर वक़्त ने फिर कैरोली के साथ खेल खेला और 1940 के ओलंपिक्स वर्ल्ड वार के कारण रद्द हो गए। लेकिन कैरोली निराश नहीं हुआ, उसने अपना पूरा ध्यान 1944 के ओलंपिक्स पर लगा दिया। पर वक़्त तो जैसे उसके धैर्य की परीक्षा ही ले रहा था, 1944 के ओलंपिक्स भी वर्ल्ड वार के कारण रद्द कर दिए गए।

एक बार फिर हंगरी वासियों का ओलिंपिक गोल्ड मैडल जीतने से विश्वास डगमगाने लगा था, क्योंकि कैरोली की उम्र बढती जा रही थी। परन्तु कैरोली का सिर्फ एक ही लक्ष्य था पिस्टल शूटिंग में

ओलंपिक्स गोल्ड मैडल जीतना इसलिए उसने निरंतर शूटिंग अभ्यास जारी रखा। आख़िरकार 1948 के ओलंपिक्स आयोजित हुए, कैरोली ने उसमे हिस्सा लिया और अपने देश के लिए पिस्टल शूटिंग का गोल्ड मैडल जीता। पूरा देश ख़ुशी से झूम उठा, क्योकि कैरोली ने वो कर दिखाया जो उसकी उम्र के किसी भी खिलाड़ी के लिए भी असंभव था। पर कैरोली यही नहीं रुके और उसने 1952 के ओलंपिक्स में भी भाग लिया और वहां भी गोल्ड मैडल जीत कर इतिहास बना दिया। कैरोली उस पिस्टल इवेंट में लगातार दो गोल्ड मैडल जीतने वाला पहला खिलाडी बना।

अर्जुन गर्ग

कक्षा XI A प्रथम पाली

: हम सब कहते

कोई नहीं हवा से कहता,

खबरदार जो अंदर आई।

बादल से कहता कब कोई,

क्यो जलधार यहाँ बरसाई।

फिर क्यो हमसे भैया कहते,

यहाँ न आओ भागो जाओ।

अम्मी कहती हैं घर भर में,

खेल खिलौने मत फैलाओ।

पापा कहते बाहर खेलो,

खबरदार जो अंदर आए।

हम पर ही सबका बस चलता,

जो चाहे वह डाटँ लगाए।

मौ. शाहजीम चौधरी

कक्षा- 7 द्वितीय पाली

माता-पिता

मां ने सीने से लगाया, आंचल में छुपाया मुझको,

पिता ने कंधे पर बिठाया, बांहों में उठाया मुझको,

भूख लगी तो खिलाया, धूप लगी तो बचाया मुझको,

मां ने फुसलाकर सिखाया, पिता ने डांट कर समझाएं मुझको,

संस्कारवान बनाया मुझको, अच्छे बुरे का फर्क बताया मुझको,

हर दुख से दूर किया, खुशियों से नहलाया मुझको,

ममता और प्यार से सींच माता-पिता ने मेरे, पौधे से पेड़ बनाया मुझको ।

विशु बालियान

कक्षा - दसवीं द्वितीय पाली

जनसंख्या

अगर देस की जनसंख्या

रोक नहीं हम पायेंगे।

सोचकर देखो जरा एक दिन कहाँ पहुँच हम

जायेंगी ना खाने को रोटी होगी, ना पीने को पानी।

ना तो साफ हवा होगी

ना होगी हरियाली।

प्रदूषण की मार पड़ेगी

रहने को ना जगह मिलेगी।

होगें चारों ओर बिलखते बच्चे कुछ कच्चे कुछच पक्के।

आओ ऐसे संकट से देंश बचाये मिलकर सुंदर भारत बनाएँ।

आदित्य हूँन

कक्षा- ९० द्वितीय पाली

हमारा विद्यालय

यह हमारा विद्यालय है,

शिक्षा का उत्तम आलय है ।

पढ़ते यहाँ हम सब बच्चे,

नियम - रीति में है सब अच्छे ।

इंग्लिश यहाँ सिखाई जाती है ।

हिन्दी यहाँ पढ़ाई जाती है ।

गणित यहाँ समझाई जाती है ।

कला यहाँ सिखलाई जाती है ।

शिक्षक सभी गुणी विद्वान,

देते विद्या का नित दान ।

भाईचारे की शिक्षा देते,

देश भक्ति का पाठ पढ़ाते ।

खेलकूद में सबसे अच्छे,

हमारे विद्यालय के बच्चे ।

हमारे प्राचार्य सबसे अच्छे,

कर्त्तव्यपरायण सीधे - सच्चे ।

ये शिक्षा का उत्तम आलय है,

यह हमारा विद्यालय है ।

यहाँ न कोई भेद- भाव है, सभी में मिलता समभाव है ।

यस

कक्षा - 8

द्वित्तीय पाली

गरीब बना अमीर

एक बार एक औरत अपने बच्चे के साथ अकेला रहती थी वह दूसरे गांव ट्रेन से काम करने जाती थी उसका बच्चा 5 साल का था 1 दिन रह जा रही थी जब वो ट्रेन में चल रही थी तब भीड़ के कारण उसका पांव फिसल गया और वो ट्रेन के नीचे आ गई और उस बच्चे की मां की मृत्यु हो गई जब उसकी पड़ोसन को पता चला तो उसने उस बच्चे को पा लिया उसकी पड़ोसन बहुत गरीब थे जब मैं बच्चा बड़ा हुआ तो उसके घर पर खाने के लिए भी पैसे नहीं थे और उसकी सौतेली मां बहुत बीमार थी तो उसने तय किया कि वह गांव में काम करने जाएगा अब वह बस में बैठ कर शहर की तरफ चल दिया वह एक हवेली में पहुंचा और उसने वहां पर कहा साहब अगर आपको कोई भी काम करवाना हो तो मैं आपका वह सारा काम कर सकता हूं आप मुझे रख लीजिए।

साहब: अगर तुम सारा काम कर सकते हो तो मैं तुम्हें रख लेता हूं

लड़का खुश होते हुए साहब को धन्यवाद किया।

अगले दिन सुबह साहब लड़के को कहते हुए आज हमारे मेहमान आएंगे तो तुम्हें उनके बर्तन मांजने हैं

लड़का: ठीक है साहब

उनके मेहमान आने के बाद लड़के ने खाना सिर्फ किया और जब उन्होंने खाना खा लिया तो वह उनके बर्तन मांजने लगा बर्तन मांजने के बाद उसे उसे बड़ी प्यास लगी और उसने देखा टेबल पर पानी का जग रखा है तो उसने एक कप उठाया और उसके अंदर पानी डालकर पीलिया यह सब साहब ने देख लिया और वह गुस्सा होते हुए मूर्ख यह पानी मेहमानों के लिए था तूने इसे पीकर इसको बर्बाद कर दिया और उसे मार कर बिना उसे पैसे दिए निकाल दिया और फिर वह बिचारा एक जगह पर बैठकर भीख मांगने लगा ताकि वह उन पैसों से अपने गांव पहुंच जाए पर उसके पास इतने पैसे नहीं हो पाए 1 दिन उसके सामने एक आदमी आकर खड़ा हुआ तो लड़के ने कहा आप मुझे पैसे दे दीजिए मैं आपको दुआएं दूंगा तो आदमी ने कहा दुआओं से क्या होगा मेरा अगर कुछ देते हो तो बताओ वरना मेरा टाइम वेस्ट मत करो

लड़का उसकी बात हो सोचते हुए फिर एक दिन उसने सोचा और वह एक फूलों की घाटी में गया वहां से उसने रंग-बिरंगे सुंदर-सुंदर फूल लिए और उनके गुलदस्ता बनाकर बेचा और उसे उससे पैसे भी मिले ऐसे उसने पौधों के बीच लेकर पौधे उगाने लगा और उनके गुलदस्ते बनाकर बेचने लगा ऐसे ही उसकी दुकान बड़ी होती है और जल्द ही वह एक फ्लावर शॉप का मालिक बन चुका था उन पैसों से उसने अपनी मां का इलाज करवाया फिर एक दिन उसे वही आदमी मिला और उसने कहा आपने मुझे पहचाना

आदमी ने कहा नहीं मैंने तुम्हें नहीं पहचाना तुम कौन हो

मैं वही लड़का हूं मुझे भीख मांग रहा था उस दिन और आपने मुझे सलाह दी आदमी ने कहा कौन मैंने किसी को सलाह नहीं दी

ठीक है पर आप इतने परेशान क्यों दिख रहे हैं

क्या बताऊं मेरे ऑफिस के बॉस मुझसे बहुत नाराज है

लड़के ने कहा तो आप यह फूल ले लीजिए और अपने बॉस को दे देना

पर मेरे पास तो पैसे ही नहीं है

लड़के ने कहा कोई बात नहीं आप मुझे दुआएं दे देना

फिर वह आदमी समझ चुका था कि वह कौन है

शिक्षा- 1 हर व्यक्ति एक ही समान होता है

शिक्षा-2 हमें घमंडी नहीं होना चाहिए

शिक्षा-3 क्यों बैठे हुए खाली वक्त जाया नहीं करना चाहिए इतने वक्त में आप कुछ भी कर सकते।

एंजेल

कक्षा-7 द्वित्तीय पाली

: मेरी कहानी

एक बार की बात है, मैं अपने पापा के साथ मंदिर होकर वापस घर आ रहे था, जैसे ही घर के पास पहुंचे ,मैंने देखा कि एक सड़क पर रहने वाला कुत्ता जिसके पैर में बहुत ज्यादा गंभीर चोट लगी है, उसे देख कर मेरा मन बहुत दुखी हुआ ।मैंने अपने पापा से कहा कि क्या हम उसके लिए कुछ कर सकते हैं ?पापा ने मुझे आश्वासन दिया कि हम उसकी देखभाल करेंगे। फिर हमने उसको खाना वगैरह देना शुरू किया व पड़ोस के एक अंकल के साथ मिलकर उसके पैर का इलाज भी किया। कुछ दिन बाद वह बिलकुल ठीक हो गया। अब जब भी वह कुत्ता मुझे मिलता है तो देखकर लगता है कि वह मन ही मन हमें बहुत धन्यवाद दे रहा है ।हम सभी को जानवरों से प्यार करना चाहिए ,क्योंकि वह बोल नहीं सकते ।अपना दुःख बता नहीं सकते।

निहारिका, कक्षा छह ब, द्वितीय पाली

बाल कविता

सुबह सुबह से सूरज निकला,

खिड़की में से भीतर आया।

बोला उठो उठो अब जल्दी,

क्यों सोए अब तक महाराजा।

मैं बोला मैं महाराजा हूं,

तो तुम खिड़की से क्यों आए

चौकीदार खड़ा द्वार पर,

उसे बता कर क्यों ना आए?

आ गए हो चौका बर्तन,

झाड़ू पोछा करके जाना।

आगे से महाराजा के घर,

बिना इजाजत कभी ना आना।

आयुष सेमवाल

कक्षा-9

द्वित्तीय पाली

जोक्स

आज कल के बच्चों को सब याद रखने के लिए बादाम खाने के लिए दिया जाता है।

और हमारे टाइम में दो झापड़ में सब याद आ जाता था।

आलिम

कक्षा - छह

द्वित्तीय पाली

माँ सब जानती है

माँ सब जानती है,

तुझे खुद से भी ज्यादा पहचानती है,

लाख कोशिश कर तू छिपाने की,

तेरे हर सुख-दुख को वो जानती है। ...1

खुद जागकर तुझे सुलाती है,

खुद रोकर तुझे हंसाती है,

तन्हा रहती है खुद मगर,

तेरा साथ हमेशा निभाती है,

माँ सब जानती है। *...2*

जब तुझे चोट लगे तो सिसकती है माँ,

जब तू गलती करे तो समझती है माँ,

तू ही तो है माँ का लाडला,

जब तेरी आँखे भीगे आंसुओं से,

तो अपना आँचल देती है माँ,

माँ सब जानती है। *...3*

उसकी हर दुआ कबूल है,

वो तो ममता का एक फूल है,

शायद तभी भगवान से भी ऊपर आती है माँ,

एक सच्चा दोस्त कहलाती है माँ,

तुझे ना हो फुर्सत एक पल भी उसके लिए,

उसका हर पल हर लम्हा है तेरे लिए,

माँ सब जानती है। *...4*

पर आज मैं दूर हूँ,

खुद से मजबूर हूँ,

उलझा हूँ ज़िन्दगी के सफर में,

चल रहा हूँ माँ तेरे सपनो की डगर पे,

चाहत है तुझे खुश रखने की,

मुझे पता है माँ तू सब जानती है।

भूमि शर्मा

कक्षा= 10 द्वितीय पाली

: मेरा भारत

मेरे भारत के बारे में क्या कहूँ,

मेरे भारत में खुशियों का सूरज उगता है।

मेरा भारत सबको एक करके रखता है,

मेरा भारत किसी से भेद - भाव नहीं करता ,

वो - हम ही लोग हैं जो एक - दूसरे से भेद - भाव करते हैं।

पर हमें ऐसा नहीं कर ना चाहिए ।जब हमारा भारत कुछ नहीं कहता तो हम किसी को कुछ क्यों कहें। मेरा भारत सबसे अच्छा है। पूरी दुनिया में ऐसा कोई भी देश नही हैं। मेरे भारत की कई सारी चीज़ें जैसे - फूल, शहद से मीठी खुशियां इत्यादि, तो हम लोग कही क्यों जायें। भारत जिसे हम भारत माँ पुकारते हैं ।वह माँ भी चाहती है कि हम सब खुश रहें। मेरा भारत महान है .....

जय हिंद!

ईशा नामदेव

कक्षा - 8 द्वित्तीय पाली

: पिता का स्नेह

प्यार का सागर ले आते

फिर चाहे कुछ न कह पाते

बिन बोले ही समझ जाते

दुःख के हर कोने में

खड़ा उनको पहले से पाया

छोटी सी उंगली पकड़कर

चलना उन्होंने सीखाया

जीवन के हर पहलु को

अपने अनुभव से बताया

हर उलझन को उन्होंने

अपना दुःख समझ सुलझाया

दूर रहकर भी हमेशा

प्यार उन्होंने हम पर बरसाया

एक छोटी सी आहट से

मेरा साया पहचाना,

मेरी हर सिसकियों में

अपनी आँखों को भिगोया

आशीर्वाद उनका हमेशा हमने पाया

हर खुशी को मेरी पहले उन्होंने जाना

असमंजस के पलों में,

अपना विश्वाश दिलाया

उनके इस विश्वास को

अपना आत्म विश्वास बनाया

ऐसे पिता के प्यार से

बड़ा कोई प्यार न पाया

भूमिका बेनिवाल

कक्षा - दसवीं

द्वितीय पाली

कोरोना संकट

हाय - हाय ये महामारी,

स्कूल से हो गई दूरी।

हम बच्चों का मन नहीं लगता,

कैसे उठाए घर पर बस्ता।

साथी हो गए सब दूर - दूर,

मस्ती हो गई सब चूर - चूर।

लेकिन फिर भी अलग रह पाए,

कोरोना को जड़ से मिटाए।

आयशा

कक्षा - 6 अ

द्वित्तीय पाली

बेटी.....

पूजे कई देवता मैंने,तब तुमको था पाया।

क्यों कहते हो बेटी को पराया?

यह तो है मां की ममता की है छाया।

जो नारी के मन आत्मा व शारीर में है समाया।

मैं पूछती हूं उन हत्यारे लोगों से।

क्यों तुम्हारे मन में यह जहर है समाया।

बेटी तो है मां का ही साया।

क्यों अब तक कोई समझ न पाया ।

क्या नहीं सुनाई देती तुम्हें उस अजन्मी बेटी की आवाज।

जो कराह रही तुम्हारे ही अंदर बार - बार।

मत छीनो उसके जीने का अधिकार ,

आने दो उसको भी , जग में लेने दो आकार .....

कनिष्का

कक्षा 10 द्वितीय पाली

: सुविचार - मेहनत

वो सुनहरी चाबी है जो बंद भविष्य के दरवाजे भी खोल देती है ।बहुत कमियां निकालते हैं हम दूसरों में अक्सर। आओ एक मुलाकात जरा आइने से भी कर लें ।

शलोक कुमार

कक्षा 7

द्वित्तीय पाली

हमारा कर्तव्य

दीदी झूठ बोलती है... कहती है "जल्दी ही मैं दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने जा सकूंगा, यहां मैं घर में बैठे बैठे परेशान हो गया हूं और दीदी कहती है कि बस कुछ दिनों की बात है फिर पतंग उड़ाने चलेंगे" । उसे लगता है की सिर्फ हम सबके घर में रहने से, मास्क लगाने से और सेनिटाइजर के इस्तेमाल करने से कोरोना ठीक हो जाएगा । शायद उसे किसी ने बताया नहीं की इससे सिर्फ कोरोना का प्रसार रुकता है जबकि इसे पूरी तरह से जड़ से उखाड़ने के लिए वैक्सीन की जरूरत है, जिसे दुनिया भर के वैज्ञानिक बनाने में लगे हैं । ये तो हुई दवा और वैज्ञानिकों की बात लेकिन इसके अलावा भी बहुत से ऐसे लोग हैं जिनके चलते हम आराम से घर में रह पा रहे हैं जैसे सफाईकर्मी, पुलिसकर्मी, डॉक्टर, बैंककर्मी इत्यादि । हमें इन सब का भी उतना ही सम्मान करना चाहिए, जितना की हम उन वैज्ञानिकों का कर रहे हैं जो कि कोरोना का इलाज ढूंढ़ रहे हैं।

मैं चाहता हूं की मेरी दीदी भी ये पढ़े और समझे कि ऐसा नहीं है कि हम सब के सब घर में रह रहे हैं, कुछ लोग हैं जो दिन रात ईमानदारी से अपना काम सिर्फ इसलिए कर रहे हैं ताकि बाकी लोग घर में रहकर इसे फैलने से रोकें, हमें उनका सम्मान करना चाहिए ।

अनमोल

कक्षा 10 द्वित्तीय पाली

मोबाइल फोन

ए फोन मेरा वक्त खाए जा रहा है, महत्वपूर्ण लम्हों को गुमाए जा रहा है

कभी घंटे भर -कभी दो घंटे , कभी पूरा दिन खा जाता है।

ऐ मेरे आस्तित्व को मिटाएं जा रहा है।

सबसे बाते करना , निश्छल ठहाके लगाना, परिवार के साथ वक्त गुज़ारना

न जाने क्यों , ऐ उनकी जगह कब्जाए जा रहा है।

किताबों के ढेर, उनकी लाइनों में गुम रहना, अब सपने से लगते हैं।

ए फोन अब मुझे वास्तविकता से हटाए जा रहा है।

बहिर्मुखी से अंतर्मुखी बना देना,

ए उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है,

वो जानता है लोगों के मन पर कब्जा करना ,

इसलिए , तो सबको अपनी अंगुलियों पे नचाए जा रहा है।

जिन्दगी की आधी उम्र फोन में गुज़ार देना, वाकई.. कितना अजीब है ना ए.....

लोगों की उम्र घटाए जा रहा है।

लोग समझ नहीं पाते फोन का उनकी जिन्दगी में प्रवेश और दीमक की तरह

उनकी जिन्दगी के महत्वपूर्ण लम्हों को घुनना

वाकई ....ए उम्र रूपी थाम को खाए जा रहा है।

21 वर्ष में 42 वर्ष का जीवन जी लेना

बहुत जटिल है इसको समझना, लेकिन

उतना ही आसान है इसे अनुभव करना

ए अंकित अपनी जिन्दगी से इस दीमक को हटाए जा रहा है।

वाकई....ए फोन मेरा वक्त खाए जा रहा है। महत्वपूर्ण लम्हों को गुमाए जा रहा है ।

अंकित यादव

प्राथमिक शिक्षक

द्वितीय पाली

वसंत पंचमी

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

केन्द्रीय विद्यालय

केन्द्रीय विद्यालय
KENDRIYA VIDYALAYA MUZAFFARNAGAR

स्काउट गाइड गतिविधियां

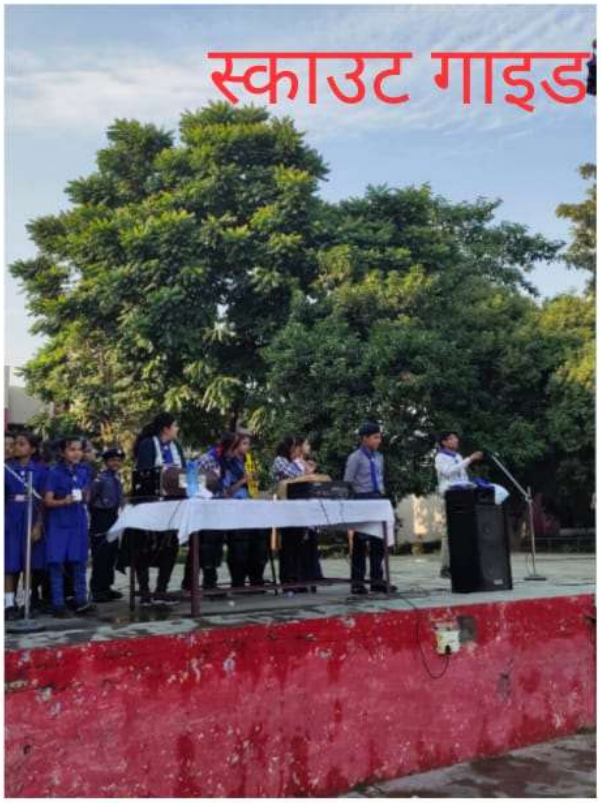

संस्कृत अनुभाग :

नमो भगवति ! हे सरस्वति !

सन्निहितं कुरु मम चित्ते ॥ नमो ॥

हंसवाहिनि ब्रह्मवादिनि

करुणापूर्णा भव वरदे ।

मञ्जुलहासिनि नाट्यविलासिनि

लास्यं कुरु मम रसनाग्रे ॥ नमो ॥

सन्निहितं कुरु मम चित्ते ॥ नमो ॥

हंसवाहिनि ब्रह्मवादिनि

करुणापूर्णा भव वरदे ।

मञ्जुलहासिनि नाट्यविलासिनि

लास्यं कुरु मम रसनाग्रे ॥ नमो ॥

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

भावार्थ :

ॐ के उच्चारण में ही तीनो शक्तियों का समावेश हैं । हे माँ भगवती जिसने सभी शक्तियों का सर्जन किया ऐसी प्राणदायिनी, दुःख हरणी, सुख करणी, समस्त रोगों का निवारण करने वाली, प्रज्ञावान माँ भगवती जो सभी देवों की देवी हैं उसकी में उपासना करती हूँ जिसने मुझे संरक्षण दिया और सभी प्रकार के ज्ञान से समृद्ध बनाया ।

गणेश मंत्र

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ: । निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा ॥

भावार्थ :

हे हाथी के जैसे विशालकाय जिसका तेज सूर्य की सहस्त्र किरणों के समान हैं । बिना विघ्न के मेरा कार्य पूर्ण हो और सदा ही मेरे लिए शुभ हो ऐसी कामना करते है ।

शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपदः । शत्रुबुध्दिविनाशाय दीपजोतिर्नमोस्तुते ॥

भावार्थ :

ऐसे देवता को प्रणाम करती हूँ ,जो कल्याण करता है, रोग मुक्त रखता है, धन सम्पदा देता हैं, जो विपरीत बुध्दि का नाश करके मुझे सद मार्ग दिखाता हैं, ऐसी दीव्य ज्योति को मेरा परम नम: ।

सूर्य मंत्र

आदित्यनमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने दीर्घ आयुर्बलं वीर्य तेजस तेषां च जायत । अकालमृत्युहरणम सर्वव्याधिविनाशम सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धरायाम्यहम ॥

*भावार्थ-:*भगवान सूर्य को नमस्कार जिस तरह वह बढ़ रहे हैं, दिन का आरम्भ हो रहा है जिसका तेज, शक्ति को दीर्घ आयु प्राप्त है जिसे मृत्यु पर विजय प्राप्त है , जो सभी की रक्षा करता है ऐसे सूर्य देवता के चरणों में समस्त तीर्थ का सुख है ।

श्रीमती शोभा रानी
प्र. स्ना.-संस्कृत (द्वितीय पाली)

संस्कृत श्लोका:

अग्निशेषमृणशेषं शत्रुशेषं तथैव च ।

पुन: पुन: प्रवर्धेत तस्माच्शेषं न कारयेत् ॥

भावार्थ :

यदि कोई आग, ऋण, या शत्रु अल्प मात्रा अथवा न्यूनतम सीमा तक भी अस्तित्व में बचा रहेगा तो बार बार बढ़ेगा ; अत: इन्हें थोड़ा सा भी बचा नही रहने देना चाहिए । इन तीनों को सम्पूर्ण रूप से समाप्त ही कर डालना चाहिए ।

नाभिषेको न संस्कार: सिंहस्य क्रियते मृगैः ।

विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेंद्रता ॥

भावार्थ :

वन्य जीव शेर का राज्याभिषेक (पवित्र जल छिड़काव) तथा कतिपय कर्मकांड के संचालन के माध्यम से ताजपोशी नहीं करते किन्तु वह अपने कौशल से ही कार्यभार और राजत्व को सहजता व सरलता से धारण कर लेता है

उद्यमेनैव हि सिध्यन्ति,कार्याणि न मनोरथै।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य,प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

भावार्थ :

प्रयत्न करने से ही कार्य पूर्ण होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं, सोते हुए शेर के मुख में मृग स्वयं प्रवेश नहीं करते हैं।

विद्वत्वं च नृपत्वं च न एव तुल्ये कदाचन्।

स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥

भावार्थ :

विद्वता और राज्य अतुलनीय हैं, राजा को तो अपने राज्य में ही सम्मान मिलता है पर विद्वान का सर्वत्र सम्मान होता है|

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।

मूढै: पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

भावार्थ :

पृथ्वी पर तीन ही रत्न हैं जल अन्न और अच्छे वचन । फिर भी मूर्ख पत्थर के टुकड़ों को रत्न कहते हैं ।

पातितोऽपि कराघातै-रुत्पतत्येव कन्दुकः।

प्रायेण साधुवृत्तानाम-स्थायिन्यो विपत्तयः॥

भावार्थ :

हाथ से पटकी हुई गेंद भी भूमि पर गिरने के बाद ऊपर की ओर उठती है, सज्जनों का बुरा समय अधिकतर थोड़े समय के लिए ही होता है।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियं।

प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥

भावार्थ :

सत्य बोलें, प्रिय बोलें पर अप्रिय सत्य न बोलें और प्रिय असत्य न बोलें, ऐसी सनातन रीति है ॥

मूर्खस्य पञ्च चिन्हानि गर्वो दुर्वचनं तथा।

क्रोधश्च दृढवादश्च परवाक्येष्वनादरः॥

भावार्थ :

मूर्खों के पाँच लक्षण हैं - गर्व, अपशब्द, क्रोध, हठ और दूसरों की बातों का अनादर॥

अतितृष्णा न कर्तव्या तृष्णां नैव परित्यजेत्।

शनैः शनैश्च भोक्तव्यं स्वयं वित्तमुपार्जितम् ॥

भावार्थ :

अधिक इच्छाएं नहीं करनी चाहिए पर इच्छाओं का सर्वथा त्याग भी नहीं करना चाहिए। अपने कमाये हुए धन का धीरे-धीरे उपभोग करना चाहिये॥

अष्टौ गुणा पुरुषं दीपयंति प्रज्ञा सुशीलत्वदमौ श्रुतं च।

पराक्रमश्चबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥

भावार्थ :

आठ गुण पुरुष को सुशोभित करते हैं - बुद्धि, सुन्दर चरित्र, आत्म-नियंत्रण, शास्त्र-अध्ययन, साहस, मितभाषिता, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता ।

न ही कश्चित् विजानाति किं कस्य श्वो भविष्यति।

अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्॥

भावार्थ :

कल क्या होगा यह कोई नहीं जानता है इसलिए कल के करने योग्य कार्य को आज कर लेने वाला ही बुद्धिमान है ।

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।

क्षणत्यागे कुतो विद्या कणत्यागे कुतो धनम्॥

भावार्थ :

क्षण-क्षण विद्या के लिए और कण-कण धन के लिए प्रयत्न करना चाहिए। समय नष्ट करने पर विद्या और साधनों के नष्ट करने पर धन कैसे प्राप्त हो सकता है ।

गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत् ।

वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः॥

भावार्थ :

बीते हुए समय का शोक नहीं करना चाहिए और भविष्य के लिए परेशान नहीं होना चाहिए, बुद्धिमान तो वर्तमान में ही कार्य करते हैं ।

क्षमा बलमशक्तानाम् शक्तानाम् भूषणम् क्षमा।

क्षमा वशीकृते लोके क्षमयाः किम् न सिद्ध्यति॥

भावार्थ :

क्षमा निर्बलों का बल है, क्षमा बलवानों का आभूषण है, क्षमा ने इस विश्व को वश में किया हुआ है, क्षमा से कौन सा कार्य सिद्ध नहीं हो सकता है ।

आयुषः क्षण एकोऽपि सर्वरत्नैर्न लभ्यते।

नीयते स वृथा येन प्रमादः सुमहानहो ॥

भावार्थ :

आयु का एक क्षण भी सारे रत्नों को देने से प्राप्त नहीं किया जा सकता है, अतः इसको व्यर्थ में नष्ट कर देना महान असावधानी है ।

नारिकेलसमाकारा दृश्यन्तेऽपि हि सज्जनाः।

अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः॥

भावार्थ :

सज्जन व्यक्ति नारियल के समान होते हैं, अन्य तो बदरी फल के समान केवल बाहर से ही अच्छे लगते हैं ।

नाभिषेको न संस्कार सिंहस्य क्रियते वने।

विक्रमार्जितसत्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता॥

भावार्थ :

कोई और सिंह का वन के राजा जैसे अभिषेक या संस्कार नहीं करता है, अपने पराक्रम के बल पर वह स्वयं पशुओं का राजा बन जाता है ।

रुद्राक्षी शर्मा ,कक्षा –षष्ठी अ, द्वितीय पाली

संस्कृत सुभाषितानि

न अस्ति बुद्धिमतां शत्रुः ॥

भावार्थ : बुद्धिमानो का कोई शत्रु नहीं होता ।

विद्या परमं बलम् ॥

भावार्थ : विद्या सबसे महत्वपूर्ण ताकत है ।

सक्षमात् सर्वेषों कार्यसिद्धिभर्वति ॥

भावार्थ : क्षमा करने से सभी कार्ये में सफलता मिलती है ।

न संसार भयं ज्ञानवताम् ॥

भावार्थ : ज्ञानियों को संसार का भय नहीं होता ।

वृद्धसेवया विज्ञानत् ॥

भावार्थ : वृद्ध - सेवा से सत्य ज्ञान प्राप्त होता है ।

सहायः समसुखदुःखः ॥

भावार्थ : जो सुख और दुःख में बराबर साथ देने वाला होता है सच्चा सहायक होता है ।

आपत्सु स्नेहसंयुक्तं मित्रम् ॥

भावार्थ : विपत्ति के समय भी स्नेह रखने वाला ही मित्र है ।

मित्रसंग्रहेण बलं सम्पद्यते ॥

भावार्थ : अच्छे और योग्य मित्रों की अधिकता से बल प्राप्त होता है ।

सत्यमेव जयते ॥

भावार्थ: सत्य अपने आप विजय प्राप्त करती है ।

उपायपूर्वं न दुष्करं स्यात् ॥

भावार्थ: उपाय से कार्य कठिन नहीं होता ।

विज्ञान दीपेन संसार भयं निवर्तते ॥

भावार्थ: विज्ञानं के दीप से संसार का भय भाग जाता है ।

सुखस्य मूलं धर्मः ॥

भावार्थ: धर्म ही सुख देने वाला है ।

धर्मस्य मूलमर्थः ॥

भावार्थ: धन से ही धर्म संभव है ।

विनयस्य मूलं विनयः ॥

भावार्थ: वृद्धों की सेवा से ही विनय भाव जाग्रत होता है ।

अलब्धलाभो नालसस्य ॥

भावार्थ: आलसी को कुछ भी प्राप्त नहीं होता ।

आलसस्य लब्धमपि रक्षितुं न शक्यते ॥

भावार्थ: आलसी प्राप्त वस्तु की भी रक्षा नहीं कर सकता ।

मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥

भावार्थ: मौन यह सर्व कार्य का साधक है ।

कुलं शीलेन रक्ष्यते ॥

भावार्थ: शील से कुल की रक्षा होती है ।

सर्वे मित्राणि समृध्दिकाले ॥

भावार्थ: समृद्धि काल में सब मित्र बनते हैं ।

कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥

भावार्थ: पुत्र कुपुत्र होता है लेकिन माता कभी कुमाता नहीं होती ।

गुरुणामेव सर्वेषां माता गुरुतरा स्मृता ॥

भावार्थ: सब गुरु में माता को सर्वश्रेष्ठ गुरु माना गया है ।

मनः शीघ्रतरं बातात् ॥

भावार्थ: मन वायु से भी अधिक गतिशील है ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ॥

भावार्थ: मन हि मानव के बंधन और मोक्ष का कारण है ।

भाग्यं फ़लति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् ॥

भावार्थ : भाग्य हि फ़ल देता है, विद्या या पौरुष नहीं ।

चराति चरतो भगः ॥

भावार्थ : चलनेवाले का भाग्य चलता है ।

शांतनु
कक्षा षष्ठी ब
द्वितीय पाली

व्यायामः

भ्रमण-धावन-क्रीडनादिभिः शरीरम् श्रान्तकरणम् व्यायामः कथ्यते । व्यायामः नित्यं करणीयः भवति । अस्य नित्यानुष्ठानेन गात्राणि पुष्ठानि भवन्ति । शरीरे द्रुतं रक्तसञ्चारः भवति । प्रस्वेदैः शरीरात् आमयं विषं च निर्गच्छति । अनेन पावनकर्म अपि सम्यक् भवति । व्यवहितः व्यायामः यथैव अस्वास्थ्यप्रदः भवति तथैव अव्यवहित व्यायामः स्वास्थ्यकरः भवति । स्वस्थे शरीरे एव स्वस्थं मस्तिकं भवति । स्वस्थः जनः सुयोग्यः नागरिकः भवति । देशसेवां स्वस्थे एव नागरिकाः कुर्वन्ति । न चास्ति सदृशं तेन किंचित्स्थौल्यापकर्षणम् । आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते । शरीर- माद्यं खलु धर्मसाधनम्।

हिन्दी अनुवाद :

घूमना, दौड़ना और विभिन्न प्रकार का खेल शरीर के लिए व्यायाम कहा जाता है । व्ययाम प्रतिदिन करना पड़ता है । इसके प्रतिदिन करने से शरीर स्वस्थ होता है । शरीर में तेजी से रक्त संचार होता है । शरीर पे पसीना आता है और पसीना निकलने से शरीर का विकार निकलता है । इससे पाचन किया भी ठीक होता है । व्यवहित व्यायाम जैसे अलाभकारी होता है वैसे ही अव्यवहित व्यायाम लाभकारी होता है । स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है । स्वस्थ लोग ही सुयोग्य नागरिक होता है । देशसेवा स्वस्थ नागरिक ही कर सकते हैं । अधिक स्थूलता को दूर करने के लिए व्यायाम से बढ़कर कोई और औषधि नहीं है । परम आरोग्य अर्थात् आदर्श स्वास्थ्य की प्राप्ति व्यायाम से ही होती है । शरीर की रक्षा करना भी एक धर्म है ।

विशु बालियान ,कक्षा –दसवीं, द्वितीय पाली

व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं।

आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम् ॥

भावार्थ :

व्यायाम से स्वास्थ्य, लम्बी आयु, बल और सुख की प्राप्ति होती है। निरोगी होना परम भाग्य है और स्वास्थ्य से अन्य सभी कार्य सिद्ध होते हैं ।

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।

विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥

भावार्थ :

व्यायाम करने वाला मनुष्य गरिष्ठ, जला हुआ अथवा कच्चा किसी प्रकार का भी खराब भोजन क्यों न हो, चाहे उसकी प्रकृति के भी विरुद्ध हो, भलीभांति पचा जाता है और कुछ भी हानि नहीं पहुंचाता ।

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता ।

दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥

भावार्थ :

व्यायाम से शरीर बढ़ता है । शरीर की कान्ति वा सुन्दरता बढ़ती है । शरीर के सब अंग सुड़ौल होते हैं । पाचनशक्ति बढ़ती है । आलस्य दूर भागता है । शरीर दृढ़ और हल्का होकर स्फूर्ति आती है । तीनों दोषों की (मृजा) शुद्धि होती है।

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ।

स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ॥

भावार्थ :

व्यायामी मनुष्य पर बुढ़ापा सहसा आक्रमण नहीं करता, व्यायामी पुरुष का शरीर और हाड़ मांस सब स्थिर होते हैं ।

श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता ।

आरोग्यं चापि परमं व्यायामदुपजायते ॥

भावार्थ :

श्रम थकावट ग्लानि (दुःख) प्यास शीत (जाड़ा) उष्णता (गर्मी) आदि सहने की शक्ति व्यायाम से ही आती है और परम आरोग्य अर्थात् स्वास्थ्य की प्राप्ति भी व्यायाम से ही होती है ।

मायरा राजपूत

कक्षा- षष्ठी अ

द्वितीय पाली

शिक्षक दिवस

हिंदी पखवाड़ा

केन्द्रीय विद्यालय
हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरनगर
हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरनगर
हिन्दी पखवाड़ा

स्वतंत्रता दिवस समारोह

वृक्षारोपण

जल संरक्षण

स्त्री

स्त्रीं बिना जीवन निरर्थकम् ।

सर्वदा स्त्री साहचर्यमपेक्षते पुरुषेभ्य: ।

मंदिरेषु कृष्णेन सह राधा ।

श्रीरामेण सह सीता।

शंकरेण सह पार्वती सदैव भवति

मनुष्येवपि अध्ययने विद्या

ततः परं लक्ष्मी तत: परं शान्तिः ।

प्रात: कार्यारम्भ: उषा काले ,

कार्यसमाप्ति: संध्या काले।

निशायां निन्द्र , निन्द्रायां स्वप्ना ,मंत्रोच्चारणे , गायत्री ,पठने गीता ।

वृद्धावस्थायां करुणा सा अपि ममतया क्रोधे क्षमा।

एतदर्थम् धन्या: इमा: या: विना पुरुष: अपूर्ण : ।

मान्या जौहरी

कक्षा सप्तमी "अ"

प्रथम पाली

श्लोका:

1. यथा चतुर्भि: कनंक परीक्ष्यते
   निर्धेषणच्छेधन तापताडनै: |
   तथा चतुर्भि: पुरुष : परीक्ष्यते त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा ||

अर्थ- घिसने काटने, तापने और पीटने, इन चारों प्रकारों से जैंसे सोने का परीक्षण होता है , इसी प्रकार त्याग , शील, गुण ,एवं कर्मों से पुरुष की परीक्षा होती है |

2. सत्य- सत्यमेवेश्वरो लोके सत्य धर्म: सदाश्रितः।
सत्यमूलनि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ।।

अर्थ- सत्य ही संसार में ईश्वर है; धर्म भी सत्य के ही आश्रित है; सत्य ही समस्त भव - विभव का मूल है ; सत्य से बढ़कर और कुछ नहीं है।

मान्या जौहरी
कक्षा सप्तमी "अ"
प्रथम पाली

श्री गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अर्थ - उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अन्तःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

अंशु कुमार
कक्षा VII A
प्रथम पाली

माँ

माँ,माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार,
न त्वया सदृश्य कस्याः स्नेहम,
करुणा-ममतायाः त्वम् मूर्ति,
न कोअपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति।

तव चरणयो: मम् जीवनम् अस्ति,
'माँ' शब्दस्य महिमा अपार,
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार |

अदिति कश्यप
कक्षा VII A प्रथम पाली

श्लोक

काकचेष्टा वकोध्यानं स्वाननिन्द्रा तथैव च ।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंचलक्षणः।।

अर्थ – कौए जैसा प्रय, बगुले जैसा ध्यान , कुत्ते जैसी निन्द्रा कम खाना और घर को छोड़ देना - विद्यार्थी के यह पांच लक्षण होते है |

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।

अर्थ – अठारह पुराणों में व्यास जी के दो वचन सार के है परोपकार करो-पुण्य के लिए हैं । दूसरे को पीड़ा पहुंचाना-पाप के लिए है ।

विद्वित्वं च नृपत्वं च नैव कदाचन |
स्वदेशे पूज्यते विद्वान् तु सर्वत्र पूज्यते ||

अर्थ - विद्वित्व होना और राजा होना कभी भी समान नहीं है क्योंकि राजा की पूजा तो केवल अपने ही राज्य में होती है जबकि विद्वान की पूजा सब जगह होती है ।

अंश
कक्षा VII A
प्रथम पाली

श्लोक

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परम्ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अर्थ - गुरु ही ब्रह्मा है , गुरु ही विष्णु है, गुरु ही शंकर है , गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है एसे सतगुरु को मेरा प्रणाम है |

यो ध्रुववाणि परित्यज्य अध्रुववाणि निषेवते ।
ध्रुववाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुववाणि नष्टमेव हि ||

अर्थ- जो निश्चित को छोड़कर अनिश्चित का आश्रय लेते है उनका निश्चित भी नष्ट हो जाता है और अनिश्चित तो नष्ट के समान है ही ।

वाणीरसवती यस्य-यस्य श्रमवती क्रिया।
लक्ष्मी: दानवती यस्य , सफलं तस्य जीवितं ।।

अर्थ – जिस मनुष्य की वाणी मीठी है, जिसका कार्य परिश्रम से परिपूर्ण है, जिसका धन दान करने में प्रयोग होता है उसका जीवन सफल है।

अक्षिता
कक्षा सातवीं "अ"
प्रथम पाली

विश्व योग दिवस

- जून मासस्य एक विशन्ति: तारिका विश्वयोगदिवसः भवति |
- भारतस्य प्रधानमंत्रीणा नरेन्द्र मोदी गतवर्षम् आरब्ध: अयम् उत्सव: ।
- अस्मिन दिने प्रातः विद्यालये सर्वकारीय कार्यालये सार्वजानिकस्थलेषु च अयम् दिवसः विशेषरूपेण मान्यते |
- विशेषतया बालक-बालिका मातापितरः अध्यापकः सर्वै मिलित्वा योगआसनानि कुर्वन्ति ।
- प्राणायाम् आसनानि च असमभ्याम् शान्तिमय जीवन यच्छन्ति |
- अस्माकम विद्यालये पञ्चशताधिका: छात्रा: अस्मिन् दिने योगआसनानि कुर्वन्ति स्म ।
- पद्मासनम् , तितलिकासनम्, वज्रासनम्, शवासनम् इत्यादीनि आसनानि वयम् अकुर्म |
- विद्यालस्य योगाचार्य, कल्वानम महोदय: आसनानि प्रयोजनानि प्रति छात्रान् अवदत ।।

साक्षी सिंह
कक्षा अष्टमी "अ"
प्रथम पाली

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

डॉ. राजेन्द्रप्रसाद: स्वतंत्रभारतस्य प्रथम: राष्ट्रपति: आसीत्। अस्य जन्म 1884 तमे वर्षे दिसम्बर मासस्य तृतीयतारिकायां बिहारप्रान्ते अभवत । अस्य पितुः नाम महादेव सहाय: स: जनेभ्यः निःशुल्कमौषधि वितरति स्म । एष: एम.ए., बी.एल, एम. एल च पठितवान | एष: पटना नगरस्थे राष्ट्रियमहाविद्यालये प्राचार्यपदवीम् अलञ्चकार | महात्मनः गान्धिन: सम्पर्क प्राप्य असौ स्वतंत्रतायाः आन्दोलने मनसा वाचा कर्मणा च संलग्ना: अभवत् । एषः जलप्रलयसमुपस्थिते समय स्वयभिजनादीनि वस्तूनि संग्रह जनेभ्य: वितरितवान् । एष: 1950 तमे वर्षे स्वतंत्रभारतस्य राष्ट्रपति पदे नियुक्त: | एष: स्वमातृभूमेः संस्कृते: च आजीवन सेवयन् 1963 पञ्चतत्वं तमे वर्षे गतः |

पायल
कक्षा VIII A
प्रथम पाली

कर दर्शन प्रार्थना

कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती ,

कर मूले स्थिता गौरी; प्रभाते कर दर्शनम् ||

भूमि वंदन प्रार्थना

समुद्र वसने देनी , पर्वत स्तन मंडले ,

विष्णु- पत्नी नमस्तुभ्यम् , पाद स्पर्श क्षमस्वमें ||

स्नान पूर्व प्रार्थना

गंगे च यमुनचैव, गोदावरी, सरस्वती,

नर्मदे , सिन्धु, कावेरी, जलेस्मिन्न सन्नीधिकरू ||

सूर्य प्रार्थना

आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने,

जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्रम् नोप जायते ||

सरस्वती वंदना

सरस्वती नमस्तुभ्यं वर्दे कामरूपिणी ,

विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ||

महाभारतम्

संस्कृत भाषायाः विशालतम् ग्रंथ: "महाभारतम्" अयं इतिहास: महर्षि वेदव्यासेन लिखित: | अस्मिन ग्रंथे "लक्ष" श्लोकः वर्तन्ते, तेनायं, शत् सहस्री, इत्यादि कथ्यते । विशालों ग्रन्थः अष्टादश पर्वसु विभक्त: | महाभारतस्य मूलकथायां यद्यपि पाण्डव-कौरवयोः विरोधादि विषया: वाणताः वर्णितः भवन्ति तथापि बहुभि: उपकथिभि: अमूल्य नीतिय अपि प्रतिभादितः सन्ति । विदुरनीति द्वारा राजनीत: "यक्ष-युधिष्ठिर संवाद" धार्मिक विषयः "भगवत् गीता" द्वारा वेदान्त विषयाः व सरलतया उपदिष्टा: भवन्ति |

माधव

कक्षा VIII A

प्रथम पाली

मम मातृभूमि

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादापि गरीयसी |

मातृभूमी जन्मतः आरभ्य मृत्युपर्यन्तम् अस्माकं रक्षण पोषण च करोति |

माता भूमि : पुत्रोअहम् पृथिव्याः इति वेदवाक्यम् अस्ति |

मातृभूमि सर्वे: नरे: वन्दनीया भवन्ति |

येन-केन-प्रकारेण मातृभूमे: रक्षा करणीयम् |

सीफा अंसारी

कक्षा VIII A

प्रथम पाली

पृथिवी माता अस्ति

माता भूमि : पुत्रोअहम पृथिव्या :इति सर्वदा सर्वे जना : कथ्यन्ति ।

परं पृथिव्या : महत्त्वं न कदापि अवगच्छन्ति ।।

या वसुंधरा तम जीवनं ददाति ,तस्या : उपकारं विस्मरन्ति ।।

धरां शस्य -श्यामला कर्तुम अस्माकं परमं कर्तव्यं अस्ति ।

तर्हि किमर्थं मानव : पृथिव्यां मलिनताम प्रसारयति ।।

न केवलं मानव : ,अपितु सर्वे प्राणी -वनस्पतय: अपि पृथिव्या : संताना :सन्ति ।

तदा मानवा : एव किमर्थं पृथिव्यां स्वाधिपत्य: दर्शयन्ति ।।

पृथिव्या : विना जीवनम् असम्भवं भवति । परं पृथिव्या : स्वच्छता तु संभव : अस्ति ।।

या वसुंधरा अस्मभ्यं जीवनं ददाति , ताम न कदापि मलिनं कर्तव्यम्।

सर्वे मिलित्वा धरां स्वच्छं -सुन्दरम, शस्य -श्यामला च कर्तव्यम् ।।

शोभा रानी ,प्र. स्ना.-संस्कृत (द्वितीय पाली)

पृथ्वी दिवस

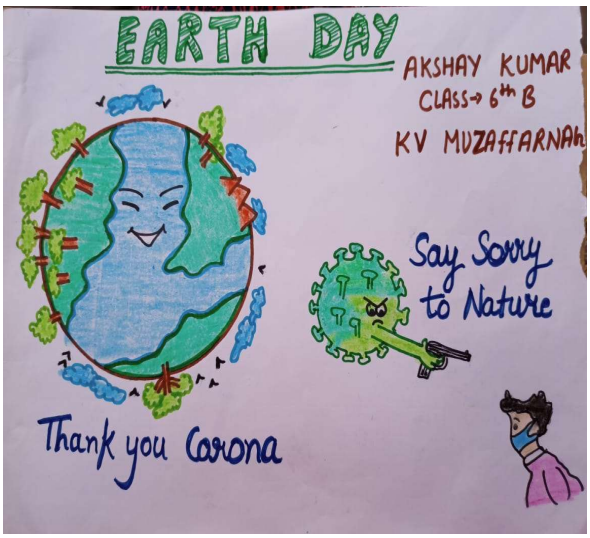

EARTH DAY
AKSHAY KUMAR
CLASS→ 6th B
KV MUZAFFARNAh
Say Sorry to Nature
Thank you Carona

EARTH DAY
Go green
Save the mother earth

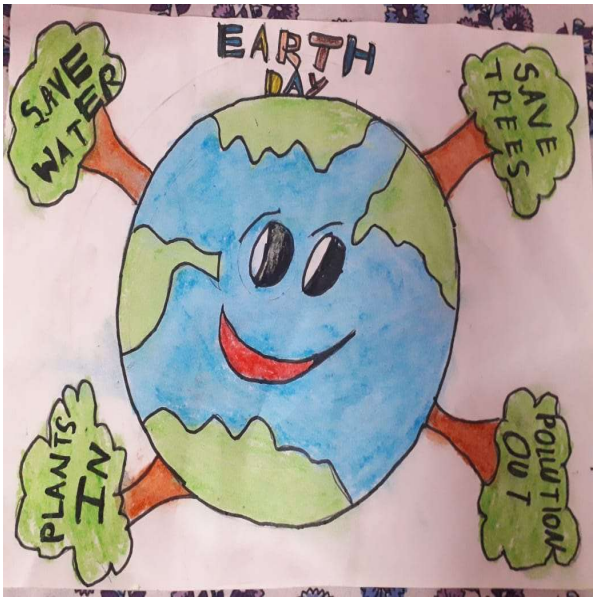

EARTH DAY
SAVE WATER
SAVE TREES
PLANTS IN
POLLUTION OUT

एन.सी.सी कार्नर

कारगिल विजय दिवस

"WALL OF HEROES"
KENDRIYA VIDYALAYA MUZAFFARNAGAR

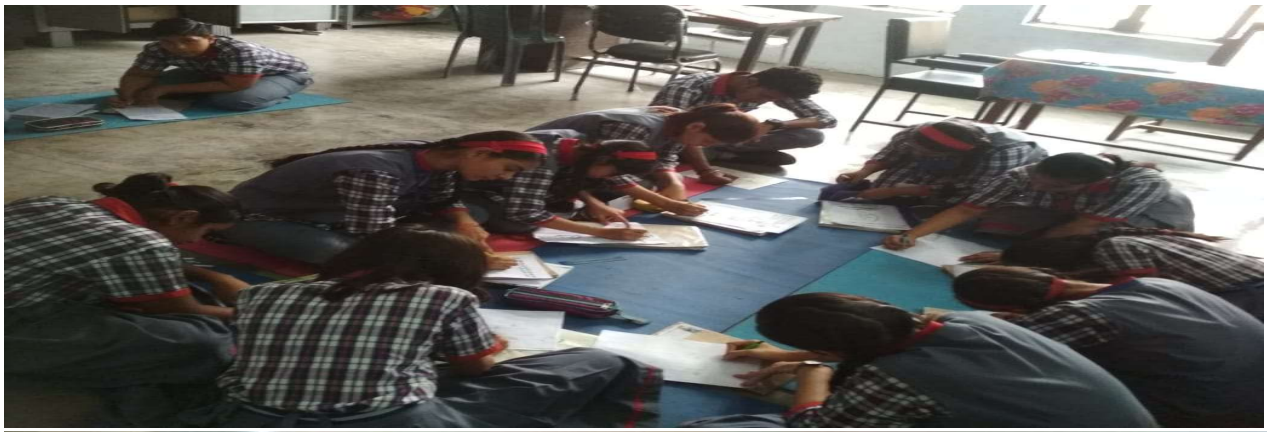

KENDRIYA VIDYALAYA MUZAFFARNAGAR

बाल दिवस

ENGLISH SECTION

"IF YOU WANT TO MASTER ENGLISH, GET INVOLVED AND PRACTISE AS MUCH AS POSSIBLE."

A PRAYER IN THE TIME OF CORONAVIRUS

Almighty and all loving God.
Father, son and Holy Spirit,
We pray to you through Christ the Healer
For those who suffer from the coronavirus Covid-19

In this land and across the world.
We pray to you for all who reach out to those
Who mourn the loss
Of each and every person who has died

As a result of contacting the disease.
Give wisdom to policy makers,
Skill to healthcare professionals and researchers,
Comfort to everyone in distress,

And a sense of calm to us all in these days
Of uncertainty and distress.
This we ask in the name of Jesus Christ, our Lord
Who showed compassion to the outcast,

Acceptance to the rejected,
And love to those to whom no love was shown.
Amen!

Vanshika Tyagi
Class- VII B I SHIFT

INSPIRATIONAL QUOTES

"Success is not final, failure is not fatal; it is the COURAGE TO CONTINUE that counts." **- Winston Churchil.**

"When you have a dream, you've got to grab it and never let it go."- **Coral Burnett.**

"I can't change the direction of the wind, but I can adjust my sails to always reach my destination." **-Jimmy Deam.**

"Life is like riding a bicycle. To keep your BALANCE, you must keep moving."- **Albert Einstein.**

Sadaf Fatima

Class- XIB I SHIFT

BLACK LIVES MATTER

I stand with you,
Against the odds,
Through the violence,
With a god.

I stand with you,
We bleed the same,
The fights not through,
Justice won't refrain.

They dispel the truth,

Unpunished for crimes,

But this youth,

Will change the times.

Black lives matter,

Loud and clear,

For those in the back,

Who choose not to hear.

It's important to be an ally and use your privilege and your voice to fight for equality. Racism should not have a place in society yet it persists and you voicing concerns,petitioning,donating and learning and teaching is how we will move forward as a society.

Kanika Chauhan

CLASS-12 B, I SHIFT

Friendship in need in a friend indeed

True friends are like diamond,

For which we care.

False friends are like autumn,

Leaves scattered every where.

True friend are very rare,

False friend can wipe our tears

True friends are like ripe seeds.

Which beer healthy green leaves.

As it is said that

And friends is need is a friend indeed

So, I said that "mind it please".

Ankit Baliyan

Class- 12th B I SHIFT

THE REAL HEAROS

Hero comes in many forms at they don't always wear a cope

A Smile a word or an action is something all it takes

They help us without thinking sometimes putting themselves at risk

Hero comes in many form this is a very true

To me my hero is very one of you.....

ASTHA SINGH
CLASS - 8 B I SHIFT

The Greedy Mouse

A greedy mouse saw a basket full of corn. He wanted to eat all of the corn so he made a small hole in the basket. He squeezed in through the hole. He ate a lot of corn until he was full and was very happy. Now he wanted to come out. He tried to come out through the small hole. He could not. His belly was full. He tried again. But it was of no use. The mouse started crying. A rabbit was passing by. It heard the mouse's cry and asked, "Why are you crying, my friend?" The mouse explained, " l made a small hole and came into the basket to eat the corn. Now l am not able to get out through that hole." The rabbit said, " it is because you ate too much. Wait till your belly shrinks." The Rabbit laughed and went away. The mouse fell asleep in the basket. The next morning his belly had shrunk. But he wanted to ate some more corn. He forgot all about getting out of basket. So he ate the corn and his belly was really big again. After eating, the mouse remembered that he had to escape. But obviously, he could not. So he thought, "oh! Now l will go out tommorow." The cat was the next passerby. He smelt the mouse in the basket. He lifted it's lid and ate the mouse.

Moral- Being greedy will be your undoing.

Devanshi
Class- 10 B I SHIFT

What can we do?

See the trees, watch the flowers in the breeze.

Things won't be like this in a year.

If polluting is all we do.

Seize the night,

Seize the day.

Things won't always be this way.

Thousands of people are dying.

In the night, you hear children crying.

Let's stop the war.

Our people are sore.

The world can't help itself.

Who cares about your wealth?

Help me to help you.

Show the world what you can do.

Mohd Rihan Yawar

Class - X B, I SHIFT

THOUGHTS

1. Successful people have two things on their lips "SILENCE AND SMILE" smile to solve problems and silence to avoid problems.
2. If you focus on RESULTS, you will never CHANGE . If you focus on CHANGE , you will get RESULTS.
3. Life doesn't get EASIER you just get STRONGER.
4. Black colour is sentimentally bad

BUT

Every black board makes the students life bright

Jamal fatma
class -9 B , I SHIFT

Dear Mom and Dad

There's no word to describe what you mean to me. There's nothing that I can repay for what you've done to me. There's no-one that could replace both you, Theres' no-way to regret being your child, There's no imagination what I would be without you I'am so sorry to make you sad and disappointed. I am so sorry that I always spend your money. I am so sorry that. I am mad Everytime you don't let me do something that I want. I am so sorry for everything that I can't remember one by one. In the end, I just wanna say massive thank you and sorry . I have one promise for you,"I'll make you proud someday."

Jahnvi

Class- 7th B, I SHIFT

Your Best

If you always try your best
Then you'll never have to wonder
About what you could have done
If you'd summoned all your thunder.

And if your best
Was not as good
As you hoped it would be,
You still could say,
"I gave today
All that l had in me".

Devanshi

Class- 10 B, I SHIFT

IMPORTANCE OF TIME

Time is one such thing, that cannot be brought back once it is gone. It is simply irreversible. This is the reason why we must spend it wisely and ensure it is not wasted. However, even though all of us know that time once gone can never be brought back, most of us waste is without any hesitation. we often indulge in useless task at the time we should be working on something important. We waste away our precious time thoughtlessly.

Many people have the habit of doing their tasks at the last moment. When there is little or almost no time left the work is done in haste and anything doing in haste can never be accomplished appropriately.

We must recognise the importance of time and manage it efficiently. A person who learn the art of time management can accomplish almost any task in his life. However, it is easier sad then done. It takes a lot of conviction to manage time efficiently. Time management should be among one of the good habit that children must be taught from the beginning. A child who understand the value of time is more disciplined. They grow up to be responsible and successful person.

PRERNA BALIYAN

CLASS- X 'B' .ISHIFT

A PARENT'S HEART

When you feel like breaking down or crashing in,
Who do you turn to forgive your sin?
When you cried your lonely tears,
Who was there to fight your fears?
And when it feels like no one will understand,
Who will be there to hold your hand?

There are people whom you can't replace,

They are the ones who gave your face.

They will love you through your thick and thin,

They show you the light from deep within.

And if by chance you happen to die,

They will be the ones who will really cry.

You see, my friend, there is no one who can love you more,

Than your very own parents that's for sure.

Always remember that this is true,

That wherever you go your parents will be there for you.

PRERNA BALIYAN

Class X 'B'. I SHIFT

" CHOOSNG A CAEER "🏆

Career choice may be more difficult today than at any time in history for three reasons:

There is infinitely more to choose from; career definitions are more fluid and changing and the levels of expectations are rising. Most men and women entering the work today incline to change careers three or more times during the working lives. Here are ten steps that will help to ensure that your choices are good ones.

1. Begin with your values.

2. Identify your skills and talents.

3. Identify your preferences.

4. Do experiment.

5. Become broadly literate.

6. In your first job, opt for experience first and money second.

7. Aim for a job in which you become 110% committed.

8. Build your lifestyle around your income, not your expectations.

9. Invest five percent of your time, energy and money to nurture your career.

10. Be willing to change and adapt.
Therefore we should be determine n

passionate for choosing our career .

Shagun Tyagi

Class -10 B I SHIFT

OUR SOLDIERS

Our soldiers are always on duty,
For our Safety.
They sacrifice their life,
For our lives.
They love their mother like us,
But leaves their homes for the people like us.
They have families,
But they still fight for our smilies.
Our soldiers are not on rest,
They are the BEST

Shreya Singh

Class- 9 B, I SHIFT

Father- The Pillar of Life

If we go through writeups, we find that mostly 99% people writes about Mother's, her importance, but only 01% or even less then write's about father.

In my view, father is a pillar of one individual who cares about child, tried to tenderness and some times harsh behaviour to for making future of his children. Although everybody see's open love of mother, but father's never show his love to his child openly. For every child, his/her father is his/her hero, who sacrifices his dreams to fulfill his children's dreams and making carrier of his children. Even to fulfill his children dreams, father some times accepts hummiliation from society but keeps going on.

At the end, I want to say that for me, my father is every thing for me i.e., my hero, my best friend, my inspiration, and in one word "my God".

Love you PAPA.

Angelina Singh

Class : VIIIth B, I SHIFT

A Naughty Little Comet

There was a little comet who lived near the Milky Way!
She loved to wander out at night and jump about and play.

The mother of the comet was a very good old star;
She used to scold her reckless child for venturing out too far.

She told her of the ogre, Sun, who loved on stars to sup,
And who asked no better pastime than in gobbling comets up.

But instead of growing cautious and of showing proper fear,
The foolish little comet edged up nearer, and more near.

She switched her saucy tail along right where the Sun could see,

And flirted with old Mars, and was as bold as bold could be.

She laughed to scorn the quiet stars who never frisked about;
She said there was no fun in life unless you ventured out.

She liked to make the planets stare, and wished no better mirth
Than just to see the telescopes aimed at her from the Earth.

She wondered how so many stars could mope through nights and days,
And let the sickly faced old Moon get all the love and praise.

And as she talked and tossed her head and switched her shining trail
The staid old mother star grew sad, her cheek grew wan and pale.

For she had lived there in the skies a million years or more,
And she had heard gay comets talk in just this way before.

And by and by there came an end to this gay comet's fun.
She went a tiny bit too far-and vanished in the Sun!

No more she swings her shining trail before the whole world's sight,
But quiet stars she laughed to scorn are twinkling every night.

Vedant Singhal

Class- 9th B,I SHIFT

Thank you teacher

Thank you teacher!
for burning like a candle to give us light.
Thank you teacher!
for enlighting our path to success.
Thank you teacher!
for teaching us every concept.
Thank you teacher!
for every moment you scolded us for our goodness.

Thank you teacher!
for giving us the knowledge you have.
Thank you teacher!
for showing us the difference between right and wrong.

Not only the books, the syllabus,
you taught us every chapter of success.
Thank you teacher!
for sharing your experience of life.
Thank you teacher!
for leading us to the sky.

You always hoped for us to reach the greatest heights.
Now, it's time to show that we hope-
you live a long, happy and wealthy life.

Shreya Saini
Class- 12th A.
I SHIFT

THOUGHTS

1. "The true sign of intelligence is not knowledge but imagination." - Albert Einstein

2. "Success is most often achieved by those who don't know that failure is inevitable." - Coco Chanel

3. "Courage is grace under pressure." - Ernest Hemingway

4. "Learn from yesterday, live for today, hope for tomorrow. The important thing is not to stop questioning." - Albert Einstein

5. "Things work out best for those who make the best of how things work out." - John Wooden

6. "Live as if you were to die tomorrow. Learn as if you were to live forever." - Mahatma Gandhi .

Vanshika Sharma

Class- 10th B, I SHIFT

WHY GOD MADE TEACHERS

When God created teachers,

He gave us special friends

To help us understand his world

And truly comprehend

The beauty and the wonder

of everything we see,

And become a better person

With each discovery.

When God created teachers,
He gave us special guides
To show us ways in which to grow
so we can all decide
How to live and how to do,
What's right instead of wrong.
To lead us so that we can lead
And learn how to be strong.

Why God created teachers,
In his wisdom and his grace,
Was to help us learn to make our world
A better, wiser place.

Vaishnavi

Class-9 B,I SHIFT

DON'T QUIT

When things go wrong as they sometimes will;

When the road you're trudging seems all uphill;

When the funds are low, and the debts are high;

And you want to smile, but you have to sigh;

When care is pressing you down a bit

Rest if you must, but don't you quit.

Success is failure turned inside out;

The silver tint of the clouds of doubt;

And you can never tell how close you are;

It may be near when it seems afar.

So, stick to the fight when you're hardest hit –
It's when things go wrong that you mustn't quit.

NYASI

CLASS:- X-B, I SHIFT

Soul

Be still, my soul, be still; the arms you bear are brittle,
Earth and high heaven are fixt of old and founded strong.
Think rather,-- call to thought, if now you grieve a little,
The days when we had rest, O soul, for they were long.

Men loved unkindness then, but lightless in the quarry
I slept and saw not; tears fell down, I did not mourn;
Sweat ran and blood sprang out and I was never sorry:
Then it was well with me, in days ere I was born.

Now, and I muse for why and never find the reason,
I pace the earth, and drink the air, and feel the sun.
Be still, be still, my soul; it is but for a season:

Let us endure an hour and see injustice done.

Ay, look: high heaven and earth ail from the prime foundation;
All thoughts to rive the heart are here, and all are vain:
Horror and scorn and hate and fear and indignation--
Oh why did I awake? when shall I sleep again?

Soumya bhardwaj

Class X-B , I SHIFT

ONLINE STUDY, MERITS & DEMERITS

DEMERITS

- Online study requires more time than on-campus study.
- Online study makes it easier to procrastinate.
- Online study requires good time-management skills.
- Online study may create a sense of isolation.
- Online study allows you to be more independent.
- Online study requires you to be an active learner.
-

MERITS

- Online study is convenient.
- Online study offers flexibility.
- Online study brings education right to your home.
- Online study teaches you to be self-disciplined.
- Online study connects you to the global village.
- Online study promotes life-long learning.

Sadaf Fatima
Class- XI B, I SHIFT

THE EARTH(POEM)

Water keeps me cool
Trees bring a shade!!
People are so cruel
Selling water as trade!!

Somewhere my friends are lost,
Birds' chirps, rivers' sound
That I like most!!
Hmm! I also remember about the sun
That didn't know radiation gun!!

Please, please plant tree
Instead of industry!!
Otherwise my beauty
Will become a History!!
By Earth.

Bhoomika

Class- IX A, I SHIFT

THANK YOU TEACHER

Thank you teacher
For reaching deep in me
To find all I can be.
Before I can see it myself
You never gave up on me
I have a future
Because of "you"

AKSHI

CLASS-VIII (SHIFT - II)

YOUR BEST

If you always try your best
Then you'll never have to wonder
About what you could have done
If you'd summoned all your thunder.

And if your best
Was not as good
As you hoped it would be,
You still could say,
"I gave today
All that I had in me".

PARI VATS

CLASS- X (SHIFT - II)

FLYING POPCORN

A piece of popcorn escaped
From the pan
And flew across the kitchen
Like a superman

It ping - ponged back and forth
Between the oven and the freezer
Then it shot up to the ceiling
Like a daredevil trapeze.

I tried and tried to catch it,
But always missed a trick
So, finally I gave up
And ate a licorice stick.

KARTIK

CLASS- IX (SHIFT - II)

"AN OLD MAN LIVED IN THE VILLAGE"

An old man lived in the village. He was one of the most unfortunate people in the world. The whole village was tired of him; he was always gloomy, he constantly complained and was always in a bad mood.

The longer he lived, the more bile he was becoming and the more poisonous were his words. People avoided him, because his misfortune became contagious. It was even unnatural and insulting to be happy next to him.

He created the feeling of unhappiness in others. But one day, when he turned eighty years old, an incredible thing happened to him. There was a rumour about the old man.

"The old man is happy today, he doesn't complain about anything. Smiles and even his face are fresh and shinning".

The whole village gathered together. Villagers wanted to know about the secret of his happiness.

Villager - what happened to you?

Nothing special, for last eighty years I have been chasing happiness but it was useless. And then I decided to live without chasing happiness and just enjoy the life. That is why I'm happy now, said the old man.

Moral of the story: Don't chase happiness, enjoy your life.

ANTRAKSHI MALIK

CLASS- VIII (SHIFT - II)

ART - ON THE CANVAS

- Raja Ravi Verma - (29 April, 1848 - 2 October, 1906)

He is among the greatest painters in the history of Indian art.

- Jamini Roy- (11April, 1887 - 24 April, 1972)

He was an Indian painter, who blended Bengali folk traditions and Modern Art.

- Amrita Shir - Gil - (30 January, 1913 - 5 December, 1941)

She was a Hungarian - Indian painter who is regarded as a pioneer in the realm of Indian Modern Art.

- Sayed Haider Raza - (22 February, 1922 - 23 July, 2016)

He was an Indian painter who worked mainly abstracts in oil with very rich use of colour.

KRITIKA ROHILA

CLASS- X (SHIFT - II)

MOTHER

Mother, mother, mother
A caretaker and a teacher
Who taught me things!
Better! Better! Better!

A secret keeper and a friend
Who never betrays,
The special one
Who cares and loves me
Unconditionally!!

You are a superwoman
You are the one who manages
All the work on time,
This makes you the super 'mother'.

ANTRAKSHI MALIK
CLASS- VIII (SHIFT - II)

NATIONAL CADET CORPS: AN OVERVIEW

HISTORY AND DEVELOPMENT: History of NCC dates back to the year 1917. After the First World War, the British Govt. in India felt need of imparting military training to the college students as it could fulfill the requirement of new energetic youth from India. For this purpose, University Corps (UC) was founded in 1917 with its Headquarters at Calcutta. Later, it was renamed as University Training Core (UTC) in 1920 and, University Officer Training Core (UOTC) IN 1942.

But it failed to achieve its aim of attracting the Indian youth to military services up to the expectations. In 1946, one Committee under the chairmanship of Hriday Nath Kunjroo was formed. It studied the status of military training imparted to the college and University students in different countries of the world. On the basis of the findings of the Committee, National Cadet Corps (NCC) was founded on 16th July 1948. This was the beginning which gone too far in its achievements.

Gradually, NCC was extended the all parts of our country. Its air and naval wings were also started in 1950 and 1952 respectively. Before this, Girls Wing of NCC was also started in 1949 to give equal opportunity to the girl students.

Nowadays, total strength of cadets is more than 13 lakh, almost equal to the strength of Indian Army. The students of near about 4560 colleges and 7100 schools nation wide are being benefitted by NCC.

AIMS AND OBJECTIVES OF NCC: 'Unity and Discipline' is the motto of NCC. Thus, the primary objective of NCC is to develop the sense of national integration among youth and to make them disciplined citizens of India. It also aims at developing leadership quality in the future citizens of India and to make them aware of military scenario of the nation.

To achieve these objectives, a wide programme of the training of NCC cadets has been implemented. NCC Directorate organizes a variety of training camps for the military training and development of leadership qualities along with national integration among and through the cadets.

BENEFITS OF NCC: NCC is a 3 years training course. After the completion of every year annual tests and exams are conducted. The certificates of these exams are known as 'A', 'B' and 'C' certificates respectively. C- certificate is the highest qualification achieved in NCC.

The benefits are also given in the order of the level of certificates. During the recruitment to various cadres of different armed forces including army, air force and navy 5, 10 and 15 marks are awarded for A, B and C certificates respectively while preparing the final merit list of recruitment.

Apart from this general benefit, a very special benefit is also extended to the NCC cadets holding 'C' certificate. For the recruitment of Officer Cadre to army, air force and navy, 'C' certificate holder cadets are exempted from appearing in the written examination. They are allowed to directly face the SSB (Service Selection Board). A number of seats are reserved for 'C' certificate

holder NCC cadets in various training academies. This is 64 seats for NDA and IMA, 100 seats for OTA, 10 seats for Air Force Academy and 6 seats for Naval Academy in every new batch. This is the biggest scope for NCC cadets.

Along with this, these certificates have good weightage for admission to various courses in colleges and universities. In this way, a student may benefit from this National Cadet Corps if he or she makes efforts to achieve the certificates of NCC.

Sh. ADESH KUMAR,

PGT ENGLISH

(CARE TAKER NCC, KV MUZAFFARNAGAR)

एक भारत श्रेष्ठ भारत

फिट इंडिया कार्यक्रम

FIT
INDIA
02 अक्टूबर 2019

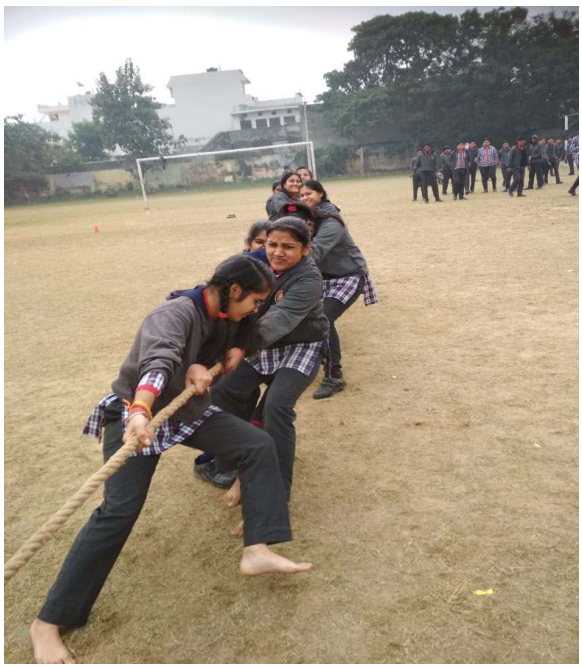

राष्ट्रीय एकता दिवस

संविधान दिवस

मातृभाषा दिवस

आर्ट कॉर्नर

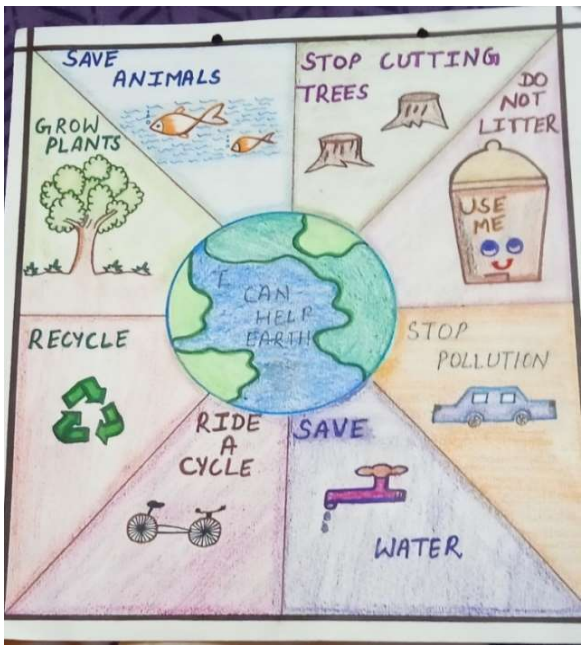

SAVE ANIMALS
STOP CUTTING TREES
DO NOT LITTER
GROW PLANTS
USE ME
I CAN HELP EARTH
RECYCLE
STOP POLLUTION
RIDE A CYCLE
SAVE WATER

I CAN HELP EARTH
RECYCLE
TURN OFF
REPAIR
DONATE
EAT LOCAL

Anshuman Sharma
Roll No. 18
Save Earth
Save Human

Name - Akshay
Class - 9th 'B'

Kargil Vijay Diwas
26th July
10th - B

CORONA VIRUS
RESPECT OUR HEROES
WASH YOUR HANDS
REGULARLY
STAY HOME STAY SAFE
PLEASE UNLOCK ME!!!
WE WANT CORONA FREE INDIA!!